# इकाई 22 सबटाइटलिंग, डबिंग, वॉयस ओवर और अनुवाद

**इकाई की रूपरेखा**


22.0 उद्देश्य

22.1 प्रस्तावना

22.2 दृश्य–श्रव्य माध्मय में अनुवाद के नए रूप

22.3 सबटाइटलिंग : अर्थ और आयाम

22.3.1 सबटाइटलिंग : अर्थ और स्वरूप

22.3.2 सबटाइटलिंग का महत्व और सीमाएँ

22.3.3 सबटाइटलिंग के प्रकार

22.4 सबटाइटलिंग में अनुवाद

22.4.1 अनूदित सबटाइटलिंग : अर्थ और स्वरूप

22.4.2 सबटाइटलिंग में अनुवाद : तकनीक और चुनौतियाँ

22.4.3 सबटाइटलिंग में अनुवाद : लाभ और सीमाएँ

22.5 डबिंग : अर्थ और स्वरूप

22.6 डबिंग में अनुवाद : अवधारणा, प्रक्रिया और लाभ

22.6.1 डबिंग–अनुवाद : अवधारणा और आयाम

22.6.2 डबिंग–अनुवाद की प्रक्रिया

22.6.3 डबिंग–अनुवाद के लाभ

22.7 डबिंग–अनुवादक : अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ

22.7.1 डबिंग–अनुवादक से अपेक्षाएँ

22.7.2 डबिंग–अनुवादक के समक्ष चुनौतियाँ

22.8 डबिंग और सबटाइटलिंग : बेहतर विकल्प

22.9 वॉयस ओवर (पार्श्व–वाचन) : अर्थ और प्रयोग–क्षेत्र

22.9.1 पार्श्व–वाचन : अर्थ और स्वरूप

22.9.2 'पार्श्व वाचन' तकनीक प्रयोग के क्षेत्र

22.10 पार्श्व–वाचन और अनुवाद

22.10.1 पार्श्व वाचन और अनुवाद : अंतर्संबंध

22.10.2 पार्श्व वाचन और डबिंग में अंतर

22.11 सारांश

22.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

22.13 उपयोगी पुस्तकें


## 22.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के बाद आप :

- दृश्य–श्रव्य माध्यमों में अनुवाद के नए रूप की जानकारी प्राप्त कर सकेंगे;
- सबटाइटलिंग, डबिंग और वॉयस ओवर (पार्श्व–वाचन) जैसे नए रूपों की

अवधारणाओं, तकनीकों, अपेक्षाओं–चुनौतियों और अन्य आयामों से परिचित हो सकेंगे;

- इनमें व्याप्त अंतर और बेहतर विकल्पों को जान सकेंगे; और
- इन नए रूपों के साथ अनुवाद के अंतर्संबंध और आयामों को समझ सकेंगे।

## 22.1 प्रस्तावना

दृश्य–श्रव्य माध्यम वास्तव में दृश्य बोधक माध्यम है, जिसका अर्थ है – जनसंचार के वे माध्यम जिनसे दृश्यों का बोध हो। यह दृश्य बोध, चित्रों के रूप में रूप होता है। ये चित्र केवल फोटो–चित्र जैसे स्थिर रूप वाले हो सकते हैं या फिर जनसंचार के टेलीविजन और सिनेमा जैसे दृश्य–श्रव्य माध्यम में। स्थिर रूप वाले चित्र अवाक् (अर्थात मूक) होते हैं, जबकि सिनेमा और टेलीविजन जैसे माध्यम की विशेषता यह होती है कि इसमें दृश्य सचल (चलते हुए) रूप में नजर आते हैं और वे बोलते हुए भी नजर आते हैं। जबकि वास्तविकता यह है कि सिनेमा–टेलीविजन आदि के कार्यक्रमों के रूप में दृश्य भी मूलतः चित्र ही होते हैं। अंतर केवल इतना है कि इनमें चित्र प्रोजेक्टर की सहायता से बहुत तेजी से दिखाए जाते हैं जिसकी वजह से यह भ्रम पैदा होता है कि वे सचल दृश्य रूप लिए हुए हैं, वे चलते हुए दिखाई देते हैं। स्थिति यह होती है कि सिनेमा–टेलीविजन कार्यक्रम के एक फ्रेम में 24 से 48 चित्र प्रति सेकंड यानी बहुत तेजी से दिखाए जाते हैं। और इसी भ्रम से हम दृश्य का सचल होने का बोध कर पाते हैं। इस आधार पर यह स्वीकार किया जा सकता है कि फोटोग्राफी के आविष्कार से ही सिनेमा की नींव रखी गई थी।

हालाँकि स्थिर रूप में देखे जा रहे चित्रों के जरिए जो भाव का संप्रेषण होता है, उसके बारे में यह माना जाता है कि चित्रों की एक सार्वभौमिक भाषा होती है, वे लगभग एक जैसे अर्थ को व्यक्त करते हैं। कहा तो यह भी जाता है कि किसी भाव–विशेष को व्यक्त करने के लिए सैकड़ों शब्दों के जाल बुनने के स्थान पर उसी भाव की एक चित्र की सहायता से ज्यादा सार्थक अभिव्यक्ति हो पाती है। मूक फिल्मों के निर्माणकाल में यही स्थिति बनी हुई थी, जिसमें कोई आवाज नहीं होती थी। तब शारीरिक भाव–भंगिमाओं को केवल चित्रों के जरिए ही व्यक्त किया जाता था। हालाँकि मूक फिल्म के शीर्षक और फिल्म के दौरान जो कथ्य–भाव, शरीरिक भंगिमा से व्यक्त करने संभव नहीं हो पाते थे उनके संवादों को मूक फिल्म के बीच–बीच में लिखित रूप वाले चित्र के जरिए दिखाया जाता था। इस तरह, तब तक सिनेमा आदि में दृश्य बोध का संप्रेषण लिखित भाषा के द्वारा किया जाता था।

दृश्य बोध के संप्रेषण के माध्यम में हालाँकि चित्र ही हैं, लेकिन यह बोध सिनेमा और टेलीविजन के माध्यम से सार्थक तरीके से संप्रेषण का रूप धारण कर पाया। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि दृश्य–श्रव्य का बोध कराने वाले संप्रेषण के दो माध्यम हैं – (क) टेलीविजन; और (ख) सिनेमा। इन दोनों माध्यमों में से सिनेमा का आविष्कार पहले हुआ और टेलीविजन का बाद में।

आप इस पाठ्यक्रम की इकाई–14 'जनसंचार का विकास और भाषा' में यह अध्ययन कर चुके हैं कि सिनेमा ने मूक फिल्मों से शुरुआत करके अपने वर्तमान स्वरूप तक की यात्रा की है, जिसमें टेलीविजन भी उसका साथी बन गया था। भाषा के साथ

जुड़कर ये माध्यम जनसंचार को अधिक रोचक एवं संप्रेषणीय बनाने में सफल रहे हैं। इन माध्यमों में नजर आने वाले चित्र के साथ–साथ भाषा ध्वनि और रंग के सार्थक समन्वय से दर्शकों को वास्तविकता का बोध हो जाता है। संप्रेषण के इन माध्यमों के दृश्यों से शताब्दियों तक में घटित होने क्रियाओं या कार्यकलापों को भाषा के जरिए बहुत ही कम समय में और यथार्थ रूप में दिखा पाना संभव हो जाता है। चित्र, ध्वनि आदि की समन्वित प्रस्तुति के रूप में इनके जरिए जिस संदेश अथवा कथ्य का संप्रेषण किया जाता है, वह दर्शकों के समक्ष सरस तथा रुचिपूर्ण तरीके से प्रस्तुत कर पाना संभव हो जाता है। ज्ञान, शिक्षा और मनोरंजन की दृष्टि से इन माध्यमों ने भाषा के साथ जुड़कर अपनी सार्थकता सिद्ध की है। भाषा और दृश्य रूप के इस तरह की समन्वित प्रस्तुति से कला–प्रेमियों को सौंदर्य की अनुभूति होती है और वे रस का आस्वादन कर पाते हैं।

## 22.2 दृश्य–श्रव्य माध्यम में अनुवाद के नए रूप

जनसंचार के सिनेमा और टेलीविजन जैसे माध्यमों का भाषा के साथ जुड़ाव स्थापित होने से समय बीतने के साथ–साथ फिल्म जगत ने एक फलते–फूलते व्यवसाय का रूप धारण कर लिया क्योंकि यह बहुत अधिक कमाई वाला व्यवसाय बन गया। इस व्यवसाय का नए–नए बाजार तक पसरने के मार्ग में भाषा बाधा का काम कर रही थी, इसलिए दृश्य–श्रव्य निर्माताओं आदि के लिए यह संभव नहीं था कि वह इन्हें किसी एक भाषा में बनाकर उसे उसी भाषा–भाषी समुदाय तक सीमित करके रख दें। इसलिए फिल्मों आदि के जरिए दृश्य बोध के संप्रेषण में भाषा के साथ जुड़ने और भाषायी फिल्मों के चलन के विस्तार के साथ–साथ अनुवाद की आवश्यकता को भी महसूस किया गया।

उस दौरान, व्यावसायिक विस्तार और नए–नए बाजार पर छा जाने के लिए टेलीविजन और सिनेमा जगत में अनुवाद एक अनिवार्य जरूरत के रूप में उभरा क्योंकि अनुवाद वह साधन है जिसपर सवार होकर ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुँचा जा सकता था। एक भाषायी फिल्म या टी.वी. कार्यक्रम को दूसरी भाषा के लोगों तक तभी सार्थक तरीके से पहुँचा पाना संभव है जब उसे उनकी अपनी भाषा के साथ जोड़ा जाए। कहने का अभिप्राय यह है कि विभिन्न भाषा–भाषियों के बीच फिल्मों आदि के आदान–प्रदान शुरू होने से उन्हें दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने के लिए अनुवाद की जरूरत बन गई। शुरू में फिल्मों का यह आदान–प्रदान वैश्विक स्तर पर था यानी एक देश की फिल्म को दूसरे देश के दर्शकों तक अनुवाद के जरिए उनकी भाषा में पहुँचाना। अगर हम भारत के संदर्भ में ही विचार करें तो यह पाते हैं कि मोटे तौर पर फिल्मों में अनुवाद की शुरुआत पश्चिमी फिल्मों से हुई और बाद में भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों के बीच परस्पर अनुवाद से।

फिल्मों का सौ वर्ष का इतिहास बताता है कि भाषायी फिल्मों के साथ ही अनुवाद कार्य भी साथ–साथ चला और समय के साथ–साथ नए–नए रूप भी धारण करता रहा। आज वस्तुस्थिति यह हो चुकी है कि अनुवाद, मीडिया और विशेष तौर पर सिनेमा का एक अभिन्न अंग बन चुका है, जिसे किसी भी प्रकार से कमतर नहीं आँका जा सकता। आज हम देश–विदेश की भिन्न–भिन्न भाषाओं में तैयार की गई अनगिनत फिल्मों को अनुवाद के द्वारा देख रहे हैं, देख सकते हैं। इस तरह, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पटल पर सिनेमा के विस्तार में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

अनुवाद को हम आम तौर पर एक भाषा के कथ्य को दूसरी भाषा में निकटतम समतुल्य रूप में प्रस्तुत करने के अर्थ से जोड़कर देखते हैं। दूसरी भाषा में प्रस्तुति में कथ्य के साथ–साथ जहाँ तक संभव हो सके, शैली की भी निकटतम समतुल्यता को बनाए रखने का प्रयास किया जाता है। लेकिन, दृश्य बोध कराने वाले माध्यमों के लिए किया जाने वाला अनुवाद कार्य परिवर्तित रूप में व्यवहार में लाया जाता है। इसीलिए यह सामान्य अनुवाद कार्य नहीं है। इसी परिवर्तित रूप के कारण दृश्य बोध संप्रेषण में अनुवाद के नए और विविध रूप हमारे सामने उभरकर आते हैं।

जब हम अनुवाद की बात करते हैं तो आम तौर पर यह मान लिया जाता है कि अनुवाद एक भाषा में कही गई बात को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करना है। इस तरह, अनुवाद को दो भाषाओं के बीच घटित होने वाला कार्य–व्यापार माना जाता है। इस प्रकार का अनुवाद वास्तव में 'अंतर–भाषिक अनुवाद' (Inter-lingual translation) होता है। जैसे अंग्रेजी–हिंदी, तमिल–गुजराती अनुवाद। इसे 'वास्तविक अनुवाद' (Translation Proper) कहा जाता है। दृश्य–श्रव्य माध्यम के संदर्भ में अनुवाद की इस अवधारणा को लागू करने का अर्थ यह है कि 'एक भाषायी दृश्य–श्रव्य सामग्री (टेलीविजन कार्यक्रम अथवा फिल्म) को दूसरी भाषा की दृश्य–श्रव्य सामग्री का रूप देना'। लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि अनुवाद के जरिए यह परिवर्तन केवल भाषा के स्तर पर होता है। अनुवाद की पारिभाषिक शब्दावली में इसे हम 'अंतर–भाषिक अनुवाद' की श्रेणी में ही रखेंगे क्योंकि इसमें सिनेमा/फिल्म का रूप तो मूल ही बना रहना होता है, लेकिन उसकी भाषा में परिवर्तन आ जाता है। फिल्म में भाषा का अंतर–भाषिक अनुवाद के रूप में यह परिवर्तन हमें जिन तीन स्तरों पर नज़र आता है, वे हैं :

(1) मूल आवाज़ तो बनी रहे लेकिन उसमें भाषा के जरिए व्यक्त भावों अथवा कथ्य को दूसरी भाषा में व्यक्त कर दिया जाए;

(2) मूल आवाज़ का संकेत तो हो, लेकिन कथ्य का संप्रेषण दूसरी भाषा में किया जाए; और

(3) मूल आवाज़ के स्थान पर पूरी तरह से दूसरी भाषा में आवाज़ डाल दी जाए।

स्पष्ट है कि अनुवाद के जरिए एक भाषायी दृश्य–श्रव्य कार्यक्रम अथवा फिल्म का दूसरी भाषा में इन तीनों स्तरों पर परिवर्तन नजर आता है। जनसंचार के क्षेत्र में इन तीनों स्तरों को व्यक्त करने के लिए अलग–अलग शब्दों को प्रयुक्त किया जाता है। परिवर्तन के स्तरों के आधार पर अंतर–भाषिक अनुवाद के ये नए आयाम हैं :

(1) दृश्य बोध के संप्रेषण में अनुवाद के दौरान पहली स्थिति भाषा का लिखित रूप लिए हुए होती है यानी अनूदित सामग्री को लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसे मीडिया की शब्दावली में **'सबटाइटलिंग'** कहा जाता है।

(2) जहाँ तक दूसरी स्थिति का संबंध है, यह **'पार्श्व वाचन' (वॉयस ओवर)** के द्वारा संभव है।

(3) तीसरी स्थिति दृश्य बोध के संप्रेषण में अनूदित पाठ की लक्ष्य भाषा में मौखिक रूप द्वारा प्रस्तुति है। मीडिया की शब्दावली इसे इसे **'डबिंग'** का नाम दिया जाता है।

फिल्म जगत में अनुवाद की इन तीनों स्थितियों ने अनुवाद के नए प्रयोग को जन्म दिया और इन्हें दृश्य – बोधक माध्यमों में इस्तेमाल की जाने वाली आधुनिक तकनीकों के अनुप्रयोग से संभव कर दिखाया। हम कह सकते हैं कि अनुवाद का यह नया स्वरूप अनुवाद को ही नए अर्थों में परिवर्तित कर रहा है, परिभाषित कर रहा है। आइए हम अनुवाद के इन नए प्रयोगों पर विचार करें। सबसे पहले सबटाइटलिंग की चर्चा करते हैं।

## 22.3 सबटाइटलिंग : अर्थ और आयम

सबटाइटलिंग और अनुवाद पर विचार करने से पूर्व इसके अर्थ–स्वरूप और प्रकार आदि को भली प्रकार से समझना जरूरी है।

### 22.3.1 सबटाइटलिंग : अर्थ और स्वरूप

जैसा कि स्पष्ट ही है कि हिंदी में प्रयुक्त 'सबटाइटलिंग' अंग्रेजी के 'Sub-Titling' शब्द का लिप्यंतरित रूप है। अंग्रेजी का यह 'Sub-Titling' शब्द, 'Sub' उपसर्ग और 'Title' से मिलकर बना है। 'Sub' उपसर्ग का अंग्रेजी में अर्थ है – 'below' (नीचे) और 'Title' का अर्थ है – 'शीर्षक'। इस तरह, नीचे शीर्षक देना 'सबटाइटलिंग' है। इसे अंग्रेजी में 'captioning' भी कहा जाता है, जिसके लिए हिंदी में 'अनुशीर्षक' शब्द को व्यवहार में लाया जाता है। हिंदी में इसके लिए 'उपशीर्षकीकरण' शब्द भी प्रयुक्त होता नज़र आ जाता है। लेकिन हमें यह भी ध्यान में रखना होगा कि यह शब्द सर्वस्वीकार्य नहीं हुआ और इस कारण चलन में नहीं आ पाया। नतीजा, 'उपशीर्षकीकरण' शब्द के स्थान के इसे अपने लिप्यंतरित रूप (अर्थात् 'सबटाइटलिंग') में ही हिंदी पर्याय के रूप में स्वीकार किया जाता है।

सबटाइटलिंग, जनसंचार के फिल्म और टेलीविज़न जैसे दृश्य–श्रव्य माध्यम में 'भाषायी रूपांतरण' (Language Transfer) का एक प्रकार है। यह फिल्मों और टेलीविजन के संवादों आदि संवाद–रहित श्रव्य को पर्दे पर ही लिखित रूप में प्रस्तुत करने की एक विधि है। यह सिनेमा और टेलीविज़न जैसे दृश्य माध्यम में पर्दे अथवा स्क्रीन पर नज़र आ रहे दृश्य के दौरान पात्रों द्वारा बोले गए संवादों–गीतों के शब्दों या फिर संवाद–रहित श्रव्य को लिखित रूप में दर्शाई जाने वाली सामग्री होती है। जैसे–जैसे दृश्य चलता नजर आता है, वैसे उसके संवादों आदि का मुद्रित रूप पर्दे (स्क्रीन) के निचले हिस्से में लिखा हुआ नज़र आता है। वैसे, यदि पर्दे के निचले भाग में पहले से ही अगर कोई लिखा हुआ हो तो यह पर्दे के शीर्ष भाग पर भी प्रदर्शित किया हुआ हो सकता है। इससे दर्शकों को उच्चरित संवाद या श्रव्य की जानकारी मिलती है और साथ ही भाषा ज्ञान अर्जन भी विकसित होता है।

स्पष्ट है कि सबटाइटलिंग करते समय केवल संवादों अथवा गीतों के शब्दों को ही लिखित रूप में प्रस्तुत नहीं किया हुआ होता बल्कि उसके साथ–साथ संवाद–रहित श्रव्य सामग्री का भी उल्लेख किया जाता है। यहाँ प्रश्न यह उभरकर सामने आता है कि 'संवाद–रहित श्रव्य' क्या है। वास्तव में फिल्म आदि में केवल संवाद और गीतों आदि को श्रव्य रूप में प्रस्तुत नहीं किया होता है। उसमें संवाद–रहित श्रव्य सामग्री भी शामिल की हुई होती है। इस प्रकार की श्रव्य सामग्री के रूप में 'हँसने की आवाज', 'गहरी साँस लेना', 'दरवाजा खोलने की आवाज' या फिर स्क्रीन पर नजर आ रहे पात्र के द्वारा केवल 'हूँ' का स्वर निकालना आदि का उल्लेख किया जा

सकता है। सबटाइटलिंग में आम तौर पर इस प्रकार की सामग्री को भी लिखित रूप में प्रस्तुत किया जाता है। लेकिन, यह फिल्म अथवा कार्यक्रम निर्माण करने वालों की इच्छा पर निर्भर करता है कि वे इस प्रकार की श्रव्य सामग्री को सबटाइटलिंग के रूप में शामिल करें अथवा नहीं करें। यही कारण है कि कई फिल्मों में संवाद–रहित श्रव्य सामग्री के सबटाइटल लिखे हुए नजर नहीं आते हैं।

लेकिन ध्यान देने की बात यह है कि सबटाइटलिंग सीमाओं में बँधी हुई होती है। सबटाइटलिंग का अर्थ स्पष्ट करते हुए डॉ.गोपाल शर्मा ने कहा है कि 'एक फ्रेम में साधारणतः दो पंक्तियाँ रखी जाती हैं जिनमें आठ–दस शब्द प्रति पंक्ति से अधिक नहीं होते। जैसे–जैसे शॉट बदलता है, पंक्तियाँ आगे बढ़ती जाती हैं अथवा पहले दी गई पंक्तियों को हटाकर नई पंक्तियाँ आती चली जाती हैं। इस तरह वक्ता की बात समझा दी जाती है।' जब पर्दे पर एक कलाकार संवाद बोल रहा है तो सबटाइटल एक ही पंक्ति में दिखा दिया जाता है, लेकिन यदि दो कलाकारों के संवादों को दर्शाना हो तो उन्हें इस प्रकार से दर्शा दिया जाता है :

–– क्या कर रही हो?

–– बाज़ार जाने की तैयारी।

भाषा की इस रूप में प्रस्तुति में लिखित सामग्री से पहले डैश लगाए गए हैं। ऐसा भी संभव है कि पहले संवाद के आगे डैश न लगाया जाए और दूसरे में डैश लगाकर दो संवादों को दर्शा दिया जाए। इसके अलावा, अलग–अलग रंगों का आधार लेकर भी पर्दे पर संवादों को लिखने के उदाहरण देखने को मिल सकते हैं। इस प्रकार के अलग–अलग रंग प्रयोग करना यह दर्शाता है कि दृश्य–विशेष में दो कलाकारों के बीच संवाद चल रहे हैं।

सबटाइटलिंग ज्यादा खर्चीला कार्य नहीं है। इसके लिए, केवल बोले गए शब्दों को लिखित रूप में शामिल करना होता है। इन्हें फिल्म में शामिल करने में बहुत अधिक समय भी नहीं लगता है। यह कार्य अत्याधुनिक कंप्यूटर–सहायक उपकरणों की सहायता से जाता है। सबटाइटलिंग कार्य को भली प्रकार से संपन्न करने के लिए विशिष्ट संपादन कौशल की अपेक्षा भी होती है, अन्यथा संवाद के लिखित रूप और पर्दे पर दिखाए जा रहे उससे संबंधित दृश्य में तारतम्य नहीं बैठ पाएगा। मान लीजिए, पर्दे पर कैमरा पुरुष पात्र के बाद महिला पात्र पर फोकस किया हुआ हो और वह संवाद बोलने लगे, लेकिन सबटाइटल रूप में जो संवाद आ रहा हो वह पुरुष पात्र से ही संबंधित हो तो वह अटपटा लगेगा।

## 22.3.2 सबटाइटलिंग का महत्व और सीमाएँ

सिनेमा जगत में सबटाइटलिंग का इतिहास अपेक्षाकृत अधिक प्राचीन है। बल्कि कहना यह चाहिए कि सिनेमा के प्रारंभ से ही इसका व्यवहार शुरू हो गया था। वस्तुतः सबटाइटलिंग की शुरुआत मूक फिल्मों के दौर से ही शुरू हो गई थी। तब, दृश्यों को व्याख्यायित करने के लिए सबटाइटलिंग का सहारा लिया जाता था। लेकिन, सबटाइटलिंग का अन्य संदर्भों में भी विशेष महत्व देखा गया है। उदाहरण के लिए,

1. सबटाइटलिंग, दृश्य बोध कराने वाली फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के दौरान प्रस्तुत किए जा रहे संवादों की लिखित रूप में प्रस्तुति अर्थात 'लिप्यंकन' होता है। लेकिन, जहाँ तक दृश्य के संवादों के लिप्यंकन का संबंध है, यह संवादों आदि के रूप में बोले गए शब्दों को समझने की दृष्टि से उपयोगी

सिद्ध होता है। कई बार ऐसा होता है कि पात्र के बोलने के लहजे की वजह से यह समझ में नहीं आता कि उसने किन शब्दों को प्रयुक्त किया है। यह विशेष तौर पर विदेशों में तैयार की गई अंग्रेजी फिल्मों के संदर्भ में अक्सर देखने को मिलता है क्योंकि हम आम भारतीयों को विदेशी अभिनेताओं द्वारा बोला गया प्रत्येक शब्द सही–सही समझ नहीं आ पाता। ऐसे में उसी भाषा में लिखे सबटाइटल संवादों आदि को समझने में सहायक सिद्ध होते हैं।

2. सबटाइटलिंग उन दर्शकों के लिए भी सुविधाजनक सिद्ध होती है जो मौखिक संवाद को समझ नहीं पाते हैं या फिर जिन्हें प्रयुक्त भाषा में तान, बलाघात और अनुतान आदि पहचानने में मुश्किल होती है। सबटाइटलिंग से उन्हें भाषा को भली प्रकार से समझने में मदद मिलती है।

3. सबटाइटलिंग उन लोगों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होती है जो बधिर हैं या जिन्हें बहुत कम सुनाई देता है। बहरे या ऊँचा सुनने वाले दर्शक संवादों को सुन नहीं पाते हैं और न ही संवाद–रहित श्रव्य का आनंद ले पाते हैं। इस प्रकार के दर्शकों के लिए सबटाइटलिंग, दृश्य–बोधक प्रस्तुति की सार्थक समझ विकसित कर उनका आस्वादन करने में सहायक सिद्ध होती है।

4. इसके अलावा, गीत–संगीत के संदर्भ में भी सबटाइटलिंग को व्यवहार में लाकर भाषा योग्यता को ऊँचे स्तर तक पहुँचा पाना संभव होता है। वैसे इसमें श्रव्य और लिखित पाठ में उच्च गुणवत्ता के समक्रमीकरण (alignment) की अपेक्षा होती है।

5. सबटाइटलिंग का शैक्षिक दृष्टि से भी प्रयोग किया जाता है। इसके अलावा, पढ़ने की क्रिया को दोहराने की दृष्टि से भी सबटाइटलिंग को व्यवहार में लाया जाता है। दृश्य–बोधक प्रस्तुति के दौरान जो बोला जा रहा होता है या संवाद–रहित श्रव्य होता है, सबटाइटलिंग में वही लिखा हुआ होता है। इस प्रकार के प्रयास से पठन क्षमता विकसित होती है और साक्षरता दर में बढ़ोतरी भी होती है। यही कारण है कि भारत सरकार द्वारा इसे बढ़ावा दिया जाता रहा है। भारत जैसे कई एशियाई और अफ्रीकी विकासशील देशों और लैटिन अमेरिकी देशों में इस प्रकार के प्रयास सार्थक सिद्ध हुए हैं।

6. इसके अलावा, विदेशी भाषा सीखने वालों को भी सबटाइटलिंग से संवादों एवं संवाद–रहित श्रव्य को समझने में मदद मिलती है।

**सबटाइटलिंग की सीमाएँ :** सबटाइटलिंग पद्धति की अपनी सीमाएँ भी हैं। हालाँकि सबटाइटल वाली फिल्म का कथ्य दूसरी भाषा के दर्शक को समझ तो आ जाता है, किंतु वह उसका स्वाभाविक आस्वादन नहीं कर पाता है। इसका मूल कारण यह होता है कि फिल्म को देखना, मूल भाषा के संवादों का कानों में सुनाई देना और उसके सबटाइटलों को साथ–साथ पढ़ना होता है। लेकिन ये तीनों कार्य एक–साथ सही तरीके से संभव नहीं हो पाते। इसका नतीजा यह होता है कि सबटाइटल वाली फिल्म के दर्शक को वैसा आनंद नहीं आ पाता, जैसा कि दृश्य–श्रव्य माध्यम में (मूल भाषा) में बनी फिल्म में आता है। इसके अलावा, अनपढ़ दर्शकों की दृष्टि से भी देखा जाए तो सबटाइटलिंग लाभदायक सिद्ध नहीं होती क्योंकि वे सबटाइटलों को पढ़ नहीं पाते।

सबटाइटलिंग की सीमाओं को भाषा के संदर्भ में भी देखा जा सकता है। हम जानते हैं कि भाषा का लिखित रूप और मौखिक रूप एक–दूसरे से भिन्न होता है। दोनों में

तुलना की जाए तो दोनों में अंतर का एक पक्ष यह नजर आता है कि मौखिक भाषा की अपेक्षा लिखित भाषा अक्सर मानक, प्रांजल और प्रतिष्ठासूचक होती है। लेकिन दृश्य–बोधक संप्रेषण यानी फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों के संवादों की भाषा कई बार मानक और प्रांजल नहीं होती है। ऐसे मौखिक संवाद को लिखित रूप देते हुए सबटाइटलिंग करना आसान नहीं होता है। साथ ही, इस मौखिक भाषा में बलाघात, तान–अनुतान, लय और लहजे के द्वारा जो कुछ दर्शक के समक्ष प्रस्तुत किया होता है, उसे सबटाइटलिंग के जरिए प्रस्तुत करना किसी भी स्तर पर कम चुनौतीपूर्ण नहीं है। यह सही है कि मूल जैसा आस्वादन सबटाइटिलों से संभव नहीं हो पाता है। फिर भी, इसकी उपयोगिता से इनकार नहीं किया जा सकता।

कतिपय सीमाओं के बावजूद, सबटाइटलिंग के बारे में कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि इससे दृश्य रूप में प्रस्तुत सामग्री के संवादों और संवाद–रहित श्रव्य को भली प्रकार से समझने में मदद मिलती है। भाषा के संदर्भ में देखा जाए तो सबटाइटलिंग का यह महत्व, किसी भी भाषा का रूप लिए हुए हो सकता है – भले ही वह दृश्य–श्रव्य कार्यक्रम की मूल भाषा हो या फिर दूसरी (अनूदित) भाषा।

## 22.3.2 सबटाइटलिंग के प्रकार

सिनेमा और टेलीविज़न आदि में सबटाइटल देना दो प्रकार से संभव है – दृश्य के दौरान बोले जा रहे एक भाषा के संवाद–गीत की पंक्तियों के शब्दों अथवा संवाद–रहित श्रव्य का उसी भाषा में लिखा होना; और दृश्य के दौरान बोले जा रहे एक भाषा के शब्दों की दूसरी भाषा में प्रस्तुति। स्वाभाविक है कि दूसरी भाषा में शब्दों को लिखित रूप में प्रस्तुत करने के लिए अनुवाद को जरिया बनाया जाता है। इन दोनों स्थितियों के आधार पर कहा जा सकता है कि सबटाइटलिंग दो प्रकार की होती है – 'सदृश भाषा सबटाइटलिंग'; और 'भिन्न भाषा सबटाइटलिंग'।

**(1) 'सदृश भाषा सबटाइटलिंग' (Same Language Subtitling)** : सदृश भाषा सबटाइटलिंग को 'सीधा उपशीर्षीकरण' (Vertical Subtitling) भी कहा जाता है। दृश्य के दौरान बोले जा रहे एक भाषा के संवाद–गीत की पंक्तियों के शब्दों अथवा संवाद–रहित श्रव्य का उसी भाषा में सबटाइटलिंग के रूप में अनुवाद करना तो उपयुक्त लगता है, किंतु विचारणीय प्रश्न यह है कि नज़र आ रहे दृश्य में एक भाषा में बोले जा रहे शब्दों का उसी भाषा में लिखने की क्या आवश्यकता है? इस प्रश्न के उत्तर को 'सबटाइटलिंग के महत्व' के संदर्भ में देखा जा सकता है, जिसपर हम पहले ही चर्चा कर चुके हैं।

सदृश भाषा सबटाइटलिंग' कार्य को अनुवाद की पारिभाषिक शब्दावली में 'लिप्यंकन' (Transcription) की श्रेणी में शामिल किया जा सकता है। 'लिप्यंकन' का अर्थ है – उच्चरित शब्दों को लिपि विशेष में लिखना। इस तरह, लिप्यंकन का संबंध मौखिक ध्वनियों की लिखित रूप में प्रस्तुति है। हालाँकि अनुवाद अध्ययन के क्षेत्र में उन भाषाओं के मौखिक साहित्य को लिपिबद्ध करने के संदर्भ 'लिप्यंकन' शब्द को प्रयुक्त किया जाता है, जो केवल बोली जाती हैं और उनकी अपनी कोई लिपि नहीं होती। लेकिन, फिल्म आदि के संदर्भ में 'लिप्यंकन' का अर्थ है – श्रव्य अथवा मौखिक ध्वनियों को पर्दे पर लिखित रूप में दर्शाना। इस प्रकार, सदृश भाषा सबटाइटलिंग, संवादों आदि का पर्दे पर लिप्यंकन करना है। हालाँकि यह एक प्रकार का 'भाव लिप्यंकन' होता है क्योंकि पूरे संवाद या चित्रावली को शब्दों में प्रस्तुत करने की गुंजाइश नहीं होती है।

**(ख) 'भिन्न भाषा सबटाइटलिंग' (Different Language Subtitling)** : सदृश भाषा सबटाइटलिंग के विपरीत, फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के संवादों आदि का पर्दे पर दूसरी भाषा में लिखित (अनूदित) रूप प्रदान कर प्रस्तुत 'भिन्न भाषा सबटाइटलिंग' कहलाता है। अनुवाद को माध्यम बनाए जाने के कारण इस प्रकार की सबटाइटलिंग को 'अनूदित सबटाइटलिंग' भी कहा जाता है। इसपर हम इकाई के अगले भाग में विस्तार से चर्चा कर रहे हैं। अन्य भाषा शिक्षण ही इसकी प्रकृति होती है।

## 22.4 सबटाइटलिंग में अनुवाद

'अनुवाद' की अवधारणा के स्पष्टीकरण के संदर्भ में आप यह अध्ययन कर चुके हैं कि अनुवाद का सीमित और व्यापक संदर्भ है। यानी अनुवाद कर्म एक भाषा, दो भाषाओं के साथ–साथ भाषिक एवं भाषेतर प्रतीक व्यवस्था के बीच संपन्न होने वाला कार्य–व्यापार है। लेकिन, इन तीनों संदर्भों में से हम 'अनुवाद' को आम तौर पर एक भाषा के कथ्य की दूसरी भाषा में प्रस्तुत के अर्थ में लेते हैं और इसे 'वास्तविक अनुवाद' कहते हैं। उसी तरह से, आम तौर पर 'सबटाइटलिंग' के अर्थ को हम 'भिन्न भाषा सबटाइटलिंग' के ही वास्तविक अर्थ में ग्रहण करते हैं और इसे 'अनूदित सबटाइटलिंग' कह दिया जाता है। आइए, अनूदित सबटाइटलिंग के अर्थ और स्वरूप को जानें।

### 22.4.1 अनूदित सबटाइटलिंग : अर्थ और स्वरूप

फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के संवादों, गीतों अथवा संवाद–रहित श्रव्य का लिखित रूप प्रदान करने वाली सबटाइटलिंग का दूसरा रूप हमें अनुवाद के माध्यम से मूर्त रूप प्राप्त करता नज़र आता है। यह फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के किसी एक भाषा में प्रस्तुत संवादों आदि को पर्दे पर दूसरी भाषा में लिखित रूप में प्रस्तुति करना है। भाषा के स्तर पर भिन्नता होने के कारण इस प्रकार की सबटाइटलिंग को 'भिन्न भाषा सबटाइटलिंग' (Different Language Subtitling) कहा जाता है। इसके अलावा, इसे 'अनूदित सबटाइटलिंग (Translated Subtitling) और 'विकर्ण सबटाइटलिंग' (Diagonal Subtitling) भी कहा जाता है।

भिन्न भाषा में सबटाइटलिंग के लिए अनुवाद को माध्यम बनाया जाता है। अनूदित सबटाइटलिंग, मूलतः स्क्रीन पर अन्य (स्रोत) भाषा से दर्शक की भाषा अर्थात लक्ष्य वर्ग की भाषा में संवाद की पाठपरक प्रस्तुति करना है। सबटाइटलिंग को अनुवाद की एक विशिष्ट विधा भी माना जाता है।

सबटाइटलिंग से अनूदित संवादों को पढ़ने के साथ–साथ दर्शक फिल्म अथवा कार्यक्रम में नज़र आ रहे अभिनेताओं की आवाज़ों और मूल संवादों को सुन भी सकते हैं और उन संवादों को अपनी भाषा में पढ़कर उसका आस्वादन भी कर सकते हैं। आम तौर पर विदेशी भाषाओं में बनी फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों को विभिन्न भारतीय भाषाओं में प्रस्तुत करने में इस प्रकार की सबटाइटलिंग को व्यवहृत किया जाता है। इसके अलावा, विभिन्न भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों और टेलीविजन कार्यक्रमों के संदर्भ में भी इसका सार्थक व्यवहार संभव है। वीडियो और वीडियो खेलों (गेम्स) आदि में भी इसका खूब प्रयोग किया जाता है।

पिछली शताब्दी के दौरान शुरू हुई सबटाइटलिंग के रूप में अनुवाद की यह नई तकनीक फिल्म जगत में आज भी जारी है। अंग्रेजी आदि विभिन्न विदेशी भाषाओं में

बनी फिल्मों की सबटाइटलिंग हिंदी में भी नजर आती है। हिंदी की 'मदर इंडिया' जैसी कई फिल्में सबटाइटलिंग के जरिए अंग्रेजी आदि विभिन्न भाषाओं के दर्शकों तक पहुँची हैं। राजकपूर की 'आवारा' फिल्म को रूस के दर्शकों ने रूसी भाषा में देखा तो वे राजकपूर के अभिनय के जबरदस्त प्रशंसक हो गए। आज भी चीनी–जापानी आदि कई अंग्रेजी–इतर विदेशी भाषाओं की फिल्में हिंदी में सबटाइटलिंग के साथ देखी जा सकती हैं। भारतीय भाषाओं में बनी फिल्मों की हिंदी सबटाइटलिंग भी बहुत मात्रा में हुई है और उनकी पैन–इंडिया (अखिल भारतीय) सुलभता संभव हुई है। इसी प्रकार, 'टाइटैनिक', 'हैरी पॉटर, 'गांधी', 'लॉर्ड ऑफ रिंग', 'लाइफ ऑफ पाई' आदि अंग्रेजी में बनी विश्व प्रसिद्ध फिल्में भी हिंदी में उत्कृष्ट सबटाइटलिंग का अन्यतम उदाहरण हैं।

## 22.4.2 सबटाइटलिंग में अनुवाद : तकनीक और चुनौतियाँ

सबटाइटलिंग के लिए अनुवाद एक चुनौतीपूर्ण और विशिष्ट तकनीकी प्रकृति का कार्य है। यह सामान्य प्रकृति का अनुवाद (लिखित अनुवाद) न होकर कुछ विशेष या भिन्न प्रकार का होता है। यह भिन्नता ही सिनेमा आदि में अनुवाद को नया स्वरूप प्रदान करती है। इसमें अनुवादक को कुछ विशेष अपेक्षाओं की कसौटी पर खरा उतरना होता है, कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना होता है। जैसे, सबटाइटल–अनुवादक को वैसे तो संवादों की लिखित प्रति उपलब्ध कराई जाती है, लेकिन ऐसा भी हो सकता है कि उन्हें लिखित प्रति उपलब्ध न कराई गई हो। अनुवादक को स्रोत और लक्ष्य भाषा की संरचना और संस्कृति का ज्ञान तो होना ही चाहिए। इसके अलावा, उसे फिल्म के दृश्य और सबटाइटल के बीच परस्पर समन्वय स्थापित करने की पर्याप्त जानकारी का होना भी अपेक्षित है।

सबटाइटलिंग के अनुवाद की प्रक्रिया, अन्य अनुवादों की तुलना में अलग किस्म की तो होती ही है, अपेक्षाकृत जटिल भी होती है। सबटाइटल–अनुवादक को फिल्म आदि के मूल संवाद और उसमें प्रयुक्त भाषा के प्रत्येक शब्द को ध्यान से सुनना–समझना होता है। मूल संवाद का अर्थ ग्रहण करने के लिए वह उसका अर्थ–विश्लेषण करते हुए दूसरी भाषा में कथ्य की प्रस्तुति के क्रम में अनूदित सबटाइटल तैयार करना होता है। वह इसे सार्थक तरीके से तभी कर पाता है जब वह सबटाइटल का अनुवाद करते समय संवाद के रूप (शब्द) की अपेक्षा उसके प्रयोजन, दृश्य की अंतर्वस्तु आदि को महत्व देता है। इस प्रक्रिया में सबटाइटलिंग–अनुवादक, लक्ष्य भाषा के उपयुक्त शब्दों–अभिव्यक्तियों का चयन करने के साथ–साथ भाषा–समाज के सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों एवं दर्शकों की मनःस्थिति का भी ध्यान रखता है।

सबटाइटलिंग–अनुवादक को मूल भाषा संवाद को दूसरी भाषा में संवादों के रूप में ही प्रस्तुत करना होता है – केवल उतने ही शब्दों में दर्शक–पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जाना होता है, जितने एक फ्रेम में आ सकें। अगर पर्दे पर नजर आ रहा दृश्य लंबा हो तो दर्शक को उस दौरान प्रस्तुत संवाद के सबटाइटल को फ्रेम की गति के साथ–साथ पढ़ना होता है। यदि दर्शक ऐसा नहीं करेगा तो उसे पढ़ने में और समझने में काफी समय लगेगा । ऐसे में दर्शक को दृश्य नीरस तक लग सकता है। अगर दृश्य छोटे समय के लिए होते हैं तो उसका पूरा सबटाइटल पढ़ने में मुश्किल होती है।

सबटाइटल–अनुवादक आम तौर पर बोले गए संवाद के शब्दों को दूसरी भाषा में प्रस्तुत करता है। यहाँ अनुवादक को यह ध्यान रखकर चलना होता है कि दर्शकों का ध्यान मुख्य रूप से दृश्य पर होता है और सबटाइटल रूप में लिखे शब्दों पर

गौणतः कम। इसलिए अनुवादक को यह भी ध्यान रखना होता है कि सबटाइटलों को आम तौर पर इतनी सघनता से तैयार किया जाए कि वे पर्दे पर ज्यादा से ज्यादा दो पंक्तियों में ही लिखे जा सकें। उनमें से प्रत्येक पंक्ति में आठ–दस शब्द ही लिखे जाते हैं। ज्यादा शब्द प्रयोग किए होने से दर्शक उसे पढ़ नहीं पाते हैं। ऐसे में लंबे–लंबे सबटाइटल के रूप में अनुवाद करना उपयुक्त नहीं होता। लंबे सबटाइटल को पढ़ने में दर्शक का ज्यादा लग जाता है, जिसके कारण वह फिल्म में अभिनेता के द्वारा प्रस्तुत किए जा अभिनय तथा फिल्म के अन्य पक्षों पर ध्यान नहीं दे पाता और फिल्म का आस्वादन नहीं कर पाता है। इसलिए एक लंबे सबटाइटल के स्थान पर दो छोटे सबटाइटल देना बेहतर रहता है। ऐसा करते समय कोशिश यह रहनी चाहिए कि सबटाइटल का अनुकूल विभाजन, लगभग बराबर लंबाई की दो पंक्तियों में किया जाए। दर्शक को छोटे सबटाइटल को पढ़ने में सुविधा रहती है। इसके साथ–साथ अनुवादक के समक्ष, एक ही फ्रेम में एक से अधिक पात्रों के संवादों को अनूदित रूप में प्रस्तुत करने की भी चुनौती कम नहीं होती।

सबटाइटल के रूप में अनूदित पाठ के शब्दों को चित्र–प्रारूप की गति के साथ समक्रमित (aligned) करना अनुवादक के लिए चुनौतीपूर्ण कार्य है। इसमें गति निर्धारण सबटाइटल शब्दों को पढ़ने में लगने वाले औसत समय को ध्यान में रखकर किया जाता है। लंबे दृश्यों के मामलों में तो अनुवादक को उतनी सावधानी बरतने की आवश्यकता नहीं होती क्योंकि लंबे दृश्य के दौरान सबटाइटल को पढ़ने के लिए पर्याप्त समय मिल जाता है। लेकिन, यदि दृश्य थोड़ी देर का हो तो दर्शकों को सबटाइटल पढ़ने में मुश्किल होती है। इसके अलावा, एक नकारात्मक पक्ष यह भी रहता है कि धीमी गति से पढ़ने वाले और भाषा का कम ज्ञान रखने वाले दर्शकों को सबटाइटलों को फ्रेम की गति के साथ अपने पठन कर्म को संयोजित करने में असुविधा होती है।

वास्तव में सबटाइटलिंग में अनूदित पंक्ति पर्दे पर कुछ सेंकड ही नज़र आती है और शॉट बदलने के साथ–साथ पंक्तियाँ आगे बढ़ती जाती हैं। वैसे, पर्दे पर पंक्ति–विशेष का बने रहना बोले गए संवाद की गति पर निर्भर करता है क्योंकि अगर दूसरा दृश्य या संवाद चल रहा हो और सबटाइटल पिछले दृश्य/संवाद से संबंधित हो तो दर्शक उसका स्वाभाविक आस्वादन नहीं कर पाता है। कहने का अभिप्राय यह है कि संवादों को फिल्म की गति और पर्दे के आकार के साथ संबद्ध करना होता है। सबटाइटलिंग के बारे में डॉ.रीतारानी पालीवाल के ये विचार ध्यान देने योग्य हैं कि 'सबटाइटल दर्शक को पढ़ने होते हैं अतः उनका आकार इतना बड़ा न हो कि फिल्म की गति के चलते उन्हें पढ़ा न जा सके। यानी एक सबटाइटल बदल कर दूसरा आने तक सामान्य दर्शक उसे पढ़ सके। दृश्य बदलते ही सबटाइटल बदलते हैं। अतः अनूदित वाक्य इतने बड़े न हों कि उन्हें एक–आध मिनट में पढ़ा न जा सके।'

इसके अलावा, अनुवादक को संवाद बोलने वाले पात्र की संवाद प्रस्तुति के तरीके की ओर ध्यान देते हुए शब्द चयन करने पड़ते है। इसलिए उसे शब्दों के साथ–साथ संवाद के जरिए क्या कहा गया है (यानी भाव अथवा कथ्य) की ओर भी ध्यान देना होता है। इसका अर्थ यह है कि उसे रूप के साथ–साथ सीमित शब्दों में अर्थ प्रस्तुति को भी महत्व देना होता है। इस प्रक्रिया में उसे कई प्रकार की युक्तियों को अपनाने की जरूरत पड़ती है। जैसे, कभी–कभी संवाद का अक्षरशः अनुवाद करने या शाब्दिक विस्तार के स्थान पर उसे संक्षिप्त रूप में भी प्रस्तुत करना।

इसका नतीजा यह होता है कि इसमें भाषा औपचारिक रूप धारण कर लेती है, उसमें सहजता नहीं आ पाती। वैसे भी यह स्वीकार किया जाता है कि लिखित भाषा आम तौर अधिक मानक, पांडित्यपूर्ण और औपचारिक होती है। इसलिए सबटाइटल–अनुवादक का यह प्रयास होना चाहिए कि वह बोले गए शब्दों के अनुवाद करने की प्रक्रिया में भाषा की रवानगी और सहज बोधगम्यता की ओर विशेष ध्यान दे। यह सार्थक अर्थ संप्रेषण केवल तभी संभव हो पाता है जब सबटाइटल मौखिक भाषा की विशेषताओं से संपन्न हो, उसमें सहजता और स्वाभाविकता हो। इसे अनूदित सबटाइटल में बनाए रखना चुनौतीपूर्ण कार्य होता है।

इसके साथ–साथ स्रोत भाषा में संचरित सांस्कृतिक तत्वों का सार्थक अंतरण या अभिव्यक्ति न हो पाना भी सबटाइटलिंग की सीमा बनकर उभरता है। ये देश–काल का परिप्रेक्ष्य लिए हुए तत्व हैं। प्रत्येक भाषा के सामाजिक–सांस्कृतिक और भौगोलिक पक्ष विशिष्ट होते हैं। स्रोत भाषा समाज के इस प्रकार के सांस्कृतिक तत्वों–पक्षों का सामान्य अनुवाद करते समय लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत करना अनुवादक के लिए चुनौतीपूर्ण होता है। वे मूल संवाद के जरिए स्वर प्राप्त स्रोत भाषा के सांस्कृतिक संदर्भों का लक्ष्य भाषा में सटीक अनुवाद नहीं कर पाते या कहा जाए कि इस प्रकार के संवाद के जरिए व्यक्त सांस्कृतिक संदर्भ को लक्ष्य भाषा में सार्थक तरीके से प्रस्तुत नहीं कर पाते। स्वाभाविक है कि इस प्रकार के अनूदित सबटाइटलों से दर्शक को पूरी तरह से संतुष्टि नहीं मिल पाती।

जैसा कि ऊपर संकेत किया जा चुका है कि सबटाइटलिंग में फिल्म की गति और पर्दे के आकार के साथ संवादों को संबद्ध करना होता है। चूँकि अनूदित सबटाइटलिंग में मूल भाषा संवाद का अक्षरशः अनुवाद नहीं किया जाता और दृश्य की गति के सीमित समय आदि को ध्यान में रखते हुए उसे आवश्यकता के अनुसार संक्षिप्त रूप में भी प्रस्तुत किया जाता है। यानी इस प्रक्रिया में सबटाइटल–अनुवादक को कभी–कभी संक्षिप्तीकरण करना तक अपेक्षित हो जाता है। इस संक्षिप्तीकरण के लिए अनुवादक मूल संवाद में से कुछ छोड़ भी देता है। ऐसा करते समय यह ध्यान देना होता है कि वह संक्षिप्तीकरण भी दृश्य से भली प्रकार से जुड़े और लक्ष्य भाषा के दर्शक–पाठक को तुरंत अर्थ संप्रेषित करे। यह सार्थक अर्थ संप्रेषण केवल तभी संभव हो पाता है जब वह मौखिक भाषा की विशेषताओं से संपन्न हो, उसमें सहजता और स्वाभाविकता हो।

कभी–कभी ऐसा भी होता है कि फिल्म के कुछ हिस्सों या दृश्यों में सबटाइटलिंग की ही नहीं जाती। ऐसा मूल भाषा के वैशिष्ट्य को बनाए रखने के लिए किया जाता है। यह विशेष तौर पर तब किया जाता है जब लक्ष्य भाषा के दर्शकों को यह दर्शाना हो कि फिल्म का पात्र–विशेष फिल्म के संवादों की भाषा बोल नहीं रहा होता। ऐसे संवादों की सबटाइटलिंग न करके पात्र के भाषायी अलगाव को दर्शकों को महसूस कराया जाता है। उदाहरण के लिए, 'Not Without My Daughter' फिल्म में ईरानी पात्र द्वारा बोले गए फारसी भाषा के संवादों को सबटाइटल नहीं किया गया क्योंकि फिल्म की मुख्य पात्र बैटी महमूडी फारसी भाषा नहीं बोलता और दर्शक उसी के दृष्टिकोण से देख–सुन रहे होते हैं। फिल्म के दौरान जनजातीय लोगों को बोलते हुए दिखाने वाले दृश्यों में भी आम तौर पर ऐसा ही किया जाता है।

### 22.4.3 अनूदित सबटाइटलिंग : लाभ और सीमाएँ

एक भाषा में बनी फिल्मों आदि की दूसरी भाषा में सबटाइटलिंग का यह लाभ रहता है कि एक ही फिल्म को अनेक भाषाओं में अलग–अलग प्रस्तुत करने के स्थान पर उसके संवादों को अनुवाद के माध्यम से लक्ष्य भाषा में लिखित रूप में प्रस्तुत कर दिया जाता है। फिल्म संवादों को इस तरह प्रस्तुत करना किफायती रहता है, यह सबसे सस्ता तरीका है। अगर थोड़ी सावधानी के साथ यह कार्य संपन्न किया हुआ हो तो लक्ष्य भाषा में प्रस्तुति काफी सहज भी हो जाती है।

सबटाइटलिंग का कार्य अपेक्षाकृत कम समय में संपन्न हो जाता है क्योंकि इसमें अनुवादक को दृश्य की अपेक्षा के अनुसार अनुवाद प्रस्तुत करना होता है, न कि दृश्य के साथ–साथ अभिनेता के हाव–भाव आदि को ध्यान में रखकर अनूदित संवाद तैयार करने होते हैं।

तकनीकी दृष्टि से भी देखा जाए तो सबटाइटलों को फिल्म में शामिल करने का कार्य जल्दी हो जाता है। और अगर, इसके स्थान पर डबिंग की जाए तो उसमें समय ज्यादा लगता है। इसलिए यह कहा जाता है कि सबटाइटलिंग शीघ्र संपन्न होने वाला कार्य है। इसमें मूल भाषा के संवादों के अनुवाद के साथ–साथ मूल संवादों को सुनने का, फिल्म के पात्रों की मूल आवाज सुनने का मौका मिल जाता है।

लक्ष्य भाषा के किसी भी दर्शक वर्ग – भले ही उन्हें सब कुछ ठीक सुनाई देता हो, या फिर कोई श्रवण–बाधित हो, सभी के लिए यह उपयोगी सिद्ध होता है। कहने का अभिप्राय यह है कि जिन लोगों को कम सुनाई देता है या कठिनाई से सुनाई देता है, वे भी सबटाइटल फिल्मों आदि को देखकर उसका रसास्वादन कर पाते हैं।

**अनूदित सबटाइटलिंग की सीमाएँ :** सबटाइटलिंग पद्धति की अपनी सीमाएँ भी हैं। हालाँकि सबटाइटल वाली फिल्म का कथ्य दूसरी भाषा के दर्शक को समझ तो आ जाता है, किंतु वह उसका स्वाभाविक आस्वादन नहीं कर पाता है। इसका मूल कारण यह होता है कि फिल्म को देखना, मूल भाषा के संवादों का न चाहते हुए भी कानों में सुनाई दे जाना और अपनी भाषा में लिखे उसके सबटाइटलों को साथ–साथ पढ़ना होता है। लेकिन ये तीनों कार्य एक–साथ सही तरीके से संभव नहीं हो पाते। इसका नतीजा यह होता है कि सबटाइटल वाली फिल्म के दर्शक को वैसा आनंद नहीं आ पाता, जैसा कि दृश्य–श्रव्य माध्यम में (मूल भाषा) में बनी फिल्म में आता है। इसके अलावा, अनपढ़ दर्शकों के लिए भी यह पद्धति लाभदायक नहीं।

## 22.5 डबिंग : अर्थ और स्वरूप

जैसा कि आपको स्पष्ट ही है कि सबटाइटलिंग की हुई फिल्म को देखना, मूल भाषा के संवादों को सुनना और अपनी भाषा में लिखे उसके सबटाइटलों को साथ–साथ पढ़ने के दर्शक को उसका स्वाभाविक आनंद नहीं मिल पाता है। अनपढ़ दर्शक के लिए तो यह और भी समस्यामूलक हो जाता है। इसलिए सबटाइटलिंग की इस प्रकार की सीमाओं ने फिल्मों के अनुवाद के क्षेत्र में एक नया मोड़ ला दिया, जिसे 'डबिंग' के नाम से जाना जाता है। डबिंग ने दर्शकों को पर्दे पर संवाद पढ़ने की कठिनाई से निजात दिला दी।

अंग्रेजी के लिप्यंतरित रूप में प्रचलित 'डबिंग' शब्द के लिए हिंदी में कोई सटीक पर्याय निर्धारित नहीं हुआ है। कतिपय विद्वानों ने इसके लिए 'ध्वन्यांतरण' एवं 'पश्च

ध्वन्यंकरण' शब्द भी प्रयुक्त किए हैं। किंतु सर्वस्वीकार्य नहीं होने की वजह से ये शब्द चलन में नहीं आ पाए हैं।

वैसे तो फिल्म जगत के लिए 'डबिंग' को कोई एकदम नई अवधारणा नहीं कहा जा सकता। इस क्षेत्र के लिए 'डबिंग' एक चिर–परिचित शब्द है। डबिंग, फिल्म निर्माण के पश्चात की जाने वाली 'पश्च–निर्माण प्रक्रिया' (post-prodution process) भी है। विशेष बात यह है कि यह फिल्म निर्माण की सामान्य प्रक्रिया का एक अनिवार्य अंग है। असल में होता यह है कि फिल्म की शूटिंग के दौरान जब अभिनेता संवाद बोलते हैं तो रिकॉर्डिंग के दौरान कई अन्य अवांछित ध्वनियाँ भी साथ ही रिकॉर्ड हो जाती हैं। उन अवांछित ध्वनियों को फिल्म के ऑडियो साउंड–ट्रेक से हटाने के लिए डबिंग की जाती है ताकि दर्शकों को केवल अभिनेताओं के संवाद ही सुनाई दें, अन्य अवांछित ध्वनियाँ नहीं। इसके अलावा, कथन–शैली अथवा समय अंतराल में संशोधन करने के लिए भी डबिंग की जाती है। संदर्भ को स्पष्ट करने तथा सही तरीके से बलाघातपूर्ण वाचिक निष्पादन के उद्देश्य से भी डबिंग की जाती है। संवादों की डबिंग का यह कार्य डबिंग थिएटर में किया जाता है, जिसमें माइक्रोफोन आदि आधुनिक तकनीकी उपकरणों की सहायता ली जाती है। इस प्रक्रिया को 'स्वचालित संवाद प्रतिस्थापन' (automated dialogue replacement) कहा जाता है। इस प्रक्रिया को अपनाकर ऑडियो ट्रेक की गुणवत्ता में सुधार किया जाता है ताकि फिल्म में संवादों आदि को स्पष्ट एवं अपेक्षाकृत अधिक प्रभावी बनाया जाता है। इंगलैंड में इसे 'पश्च–समक्रमीकरण' (post-synchronization) कहा जाता है।

'स्वचालित संवाद प्रतिस्थापन' के अंतर्गत, अभिनेता डबिंग थिएटर में अपनी फिल्म के छोटे–छोटे टुकड़ों में विभाजित शॉट्स देखता है। वह शूट की गई फिल्म में अपने होठों के फैलाव या उतार–चढ़ाव (lip movement) को पर्दे पर देखकर उसके साथ समकालिक संतुलन (synchronization) करते हुए संवाद को फिर से माइक्रोफोन से बोलता है। इस पुनः बोले गए संवाद को पहले अवांछित ध्वनियों के साथ रिकॉर्ड हुई आवाज़ के स्थान पर दर्ज कर लिया जाता है। यह प्रक्रिया 'डबिंग' कहलाती है। ध्यान देने की बात यह है कि डबिंग के रूप में यह रिकॉर्डिंग अभिनेता द्वारा स्वयं अपनी आवाज़ में भी कराई जा सकती है और अन्य कलाकार अथवा व्यावसायिक रूप से डबिंग कार्य करने वाले विशेषज्ञ द्वारा भी। इस संदर्भ में हिंदी की 'वारिस' फिल्म का विशेष तौर पर जिक्र किया जा सकता है। इस फिल्म की नायिका स्मिता पाटिल थीं, किंतु फिल्म की डबिंग होने से पहले संभवतः उनकी असामयिक मृत्यु हो गई तो दर्शकों तक यह फिल्म अन्य प्रसिद्ध अभिनेत्री रेखा की आवाज़ के जरिए पहुँची थी।

शूटिंग के दौरान रिकॉर्ड हो गई अवांछित ध्वनियों को ऑडियो साउंड–ट्रेक से हटाने के अलावा, ध्वनि–पथ (sound track) में ध्वनि–प्रभावों (sound effect) डालने के लिए भी डबिंग का सहारा लिया जाता है। जैसे, संवादहीन दृश्य में पृष्ठभूमि में संगीत ध्वनि आदि डाल देना आदि।

डबिंग का ही एक और रूप हमें उस समय भी नज़र आता है जब फिल्म में अभिनय करने वाले गीत गा रहे होते हैं। इस बारे में हम सभी जानते ही हैं कि होता यह है कि पर्दे पर तो अभिनेता गीत गाता नज़र आ रहा होता है, लेकिन आवाज़ उसकी अपनी न होकर किसी और की होती है। हालाँकि फिल्मों की पारिभाषिक शब्दावली में इसे 'पार्श्व गायन' (playback singing) कहा जाता है, लेकिन अपने विस्तृत अर्थ में इसे भी डबिंग का ही रूप स्वीकार किया जाता है। इसमें पर्दे पर अभिनय करने

वाला नज़र आता है जिसके केवल होंठ हिल रहे होते हैं, लेकिन उसके पीछे से आवाज़ किसी और की होती है। फिल्म में गीत दिखाने के लिए फिल्म निर्माता आम तौर पर पहले गीत रिकॉर्ड करते हैं और फिर उसमें बोले शब्दों को ध्यान में रखकर अभिनेता अभिनय करने के साथ–साथ अपने केवल होंठों को हिलाते हैं। इसके लिए उन्हें अपने होठों के फैलाव या उतार–चढ़ाव का गीत के बोलों/शब्दों के साथ समकालिक संतुलन करना होता है ताकि दर्शकों को यह महसूस हो कि मानों वह गाना उन्होंने ही गाया हो।

आज लता मंगेशकर, आशा भोंसले, सुनिधि चौहान, श्रेया घोशाल, अलका याग्निक, शिल्पा राव, नीति मोहन, निधि कक्कड़ हों या फिर मुकेश, मोहम्मद रफी, किशोर कुमार, मन्ना डे, महेंद्र कपूर, तलत महमूद, सोनू निगम, कुमार शानू, उदित नारायण आदि की हिंदी फिल्म जगत में गायन के क्षेत्र में अपनी विशिष्ट पहचान है। ये गायक, फिल्म अभिनेताओं–अभिनेत्रियों को अपनी मधुर आवाज़ देते हैं। हालाँकि हिंदी फिल्म जगत का इतिहास बताता है कि पहले ऐसे भी अभिनेता या अभिनेत्रियाँ रहे हैं जो फिल्मों में अभिनय करने के साथ–साथ अपने ऊपर फिल्माए गए गानों को स्वयं गाते भी थे। नूरजहाँ, सुरैया, गीता बाली, मधुबाला, के.एल. सहगल, अशोक कुमार, किशोर कुमार आदि ऐसे ही कलाकार हैं जिन्होंने अभिनय के साथ–साथ गायन में भी अपनी छाप छोड़ी। अमिताभ बच्चन तक ने अपनी 'लावारिस', 'सिलसिला' आदि कुछ फिल्मों में अपने गाने स्वयं भी गाए हैं। वैसे, दोनों ही क्षेत्रों (अर्थात अभिनय और गायन) में पारंगत न होने या फिर कहा जा सकता है कि केवल एक ही क्षेत्र की अद्वितीय विशिष्टता ने 'पार्श्व गायन' के रूप में डबिंग को महत्व दिया है और यह अपनी अनिवार्य स्थिति बना चुका है।

डबिंग को एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को दर्शकों तक पहुँचाने के माध्यम के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। इस प्रक्रिया में संवादों और गीतों आदि का एक (स्रोत) भाषा से दूसरी (लक्ष्य) भाषा में अनुवाद हो जाता है। इस प्रकार, अनुवाद के जरिए अन्य भाषा में डबिंग संभव हो पाती है। डबिंग में अनुवाद पर आगे विस्तार से चर्चा की जा रही है।

सिनेमा के क्षेत्र में तकनीकी विकास के साथ–साथ डबिंग की भी अच्छी तकनीक का विकास होता चला गया। इसमें कोई कोई संदेह नहीं कि आज डबिंग के रूप में मूल संवादों की एक अथवा एक से अधिक भाषाओं में ऑडियो रिकॉर्डिंग फिल्म उद्योग जगत का अनिवार्य हिस्सा है। इस कार्य में अत्याधुनिक सुविधाओं से संपन्न डबिंग स्टूडियो (state of the art dubbing studio) के रूप में तकनीकी सहायता और फिल्म निर्देशक, संवाद लेखक और अभिनेताओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिलती है। यह कार्य विशिष्ट संपादन कौशल (editing skill) की अपेक्षा भी रखता है।

## 22.6 डबिंग में अनुवाद : अवधारणा, प्रक्रिया और लाभ

आज 'डबिंग' व्यापक अर्थ–संदर्भ ग्रहण कर चुका है। भाषा के स्तर पर डबिंग का विस्तार हमें अनुवाद के संदर्भ में भी नज़र आता है। फिल्मों आदि की डबिंग के लिए अनुवाद अपनी परंपरागत सीमाओं को तोड़कर नए स्वरूप, नई तकनीक, नए चेहरे के रूप में उभरकर सामने आया है। इसे भी 'भाषायी रूपांतरण' (Language Transfer) का एक प्रकार स्वीकार किया जाता है। डबिंग एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को दर्शकों तक पहुँचाने का आधुनिक और प्रभावी माध्यम है। सबटाइटलिंग की भाँति डबिंग को भी अनुवाद की एक विशिष्ट विधा भी माना जाता है।

### 22.6.1 डबिंग–अनुवाद : अवधारणा और आयाम

डबिंग फिल्म के साउंड ट्रेक पर रिकॉर्ड किए गए एक भाषा के संवादों और गीतों आदि को दूसरी भाषा में बदलने से संबंधित है। इसमें मूल फिल्म के संवादों और गीतों आदि का दूसरी भाषा (लक्ष्य भाषा) में अनुवाद करके, उन अनूदित संवादों–गीतों आदि को मूल भाषा के संवादों के स्थान पर रिकॉर्ड करके फिल्म में शामिल कर लिया जाता है। इस तरह, फिल्म (यानी मूल चित्र) तो वही बनी रहती है, किंतु अनुवाद के माध्यम से भाषा परिवर्तित हो जाती है और वह दूसरी भाषा के दर्शकों तक पहुँचने का जरिया बन जाती है। डबिंग का फिल्मों के अलावा, आम तौर पर टेलीविजन सीरियलों, कार्टूनों और देश–विदेश में बनी एनीमेटिड फिल्मों में भी उपयोग किया जाता है।

डबिंग को एक भाषा से दूसरी भाषा में किए गए अनुवाद को दर्शकों तक पहुँचाने के माध्यम के रूप में भी स्वीकार किया जाता है। डबिंग का यह रूप हमें किसी एक भाषा की फिल्म अथवा टेलीविजन कार्यक्रम के संवादों को अन्य भाषा में प्रतिस्थापित कर भाषायी रूपांतरण के तौर पर नजर आता है। इसका अर्थ यह है कि स्क्रीन पर दिखाए जा रहे दृश्य में अभिनेताओं के द्वारा जो कुछ बोला जा रहा है, उसे आधुनिक तकनीक का इस्तेमाल करते हुए हटाकर उस संवाद अथवा गाने आदि को दूसरी भाषा में भाषांतरित आवाज में प्रतिस्थापित करना डबिंग है। स्वाभाविक है कि इस प्रक्रिया में संवाद का एक (स्रोत) भाषा से दूसरी (लक्ष्य) भाषा में अनुवाद हो जाता है। इस प्रकार, अनुवाद के जरिए अन्य भाषा में डबिंग संभव हो पाती है। फिल्म जगत में संवादों के इस प्रकार के प्रतिस्थापन को पुनर्स्वरीकरण (re-voicing) भी कहा जाता है।

दूसरी भाषा में रिकॉर्ड की गई आवाज़ें आम तौर पर मूल फिल्म के अभिनेताओं/कलाकारों की न होकर दूसरी (लक्ष्य) भाषा बोलने वाले किन्हीं अन्य व्यक्तियों की होती है। इसके लिए उन्हें अपनी आवाज़ एवं संवाद को पर्दे पर मौजूद दृश्य के दौरान बोले जा रहे संवाद या गाने आदि को कलाकार की शारीरिक चेष्टाओं, मुख–मुद्राओं और अभिनेता के होठों के संचालन के साथ मेल खाते हुए बनाना पड़ता है। इस तरह की सुयोगपूर्ण तालमेल करने वाली प्रस्तुति से दर्शक को यही महसूस होता है कि पर्दे पर नज़र आ रहा फिल्म अभिनेता मानो वही (लक्ष्य) भाषा ही बोल रहा है। लेकिन यह कोई सरल कार्य न होकर विशेषज्ञता की अपेक्षा रखने वाला कार्य है। इसमें कलाकार के केवल होठों के साथ समकालिक संतुलन (synchronic lip movement) और 'lip literal translation' ही नहीं करना होता बल्कि रचनात्मक कल्पना (creative flavour) का सहारा भी लेना होता है। इसके साथ–साथ, लक्ष्य भाषा में प्रस्तुत संवादों को अभिनेताओं के चेहरे की भाव–भंगिमाओं और शरीर के अंग झटकाने–मटकाने जैसी शारीरिक चेष्टओं के साथ तालमेल बैठाना होता है।

तालमेल के इन पक्षों के साथ–साथ डबिंग–अनुवादक को समय–निर्धारण (timing) को भी ध्यान में रखना होता है। उसे समय का यह तालमेल दो स्तरों पर करना होता है – पहला, अनूदित भाषा में प्रयुक्त अक्षरों को बोलने में लगने वाला समय; और दूसरा, अनूदित भाषा के शब्दों अथवा वाक्यों के बीच आने वाले विराम या श्वसन का समय। इन सभी पक्षों के साथ न्याय करते हुए किसी फिल्म को एक भाषा से दूसरी भाषा में और नए दर्शक वर्ग के समक्ष प्रस्तुत करना अनुवाद के लिए बहुत बड़ी चुनौती होती ही है, फिल्म कलाकारों के लिए भी होती है। ऐसे में अच्छे डबिंग

कलाकार की सेवाओं की अपेक्षा रहती है जो स्थानीय (लक्ष्य) भाषा का प्रयोक्ता हो और वह स्रोत भाषा से भी परिचित हो ताकि मूल फिल्म की सटीक प्रतिकृति तैयार हो सके। यही कारण है कि यह स्वीकार किया जाता है कि अनुवाद के माध्यम से की गई डबिंग भी एक कला है, कलाकारी है। वस्तुतः डबिंग–अनुवाद की सफलता की कसौटी यह रहती है कि दर्शक को यह बिलकुल आभास न हो पाए कि पर्दे में चल रहे दृश्य के दौरान अभिनेता जो संवाद आदि बोल रहे हैं, उसे वह मूल भाषा में सुन रहा है या फिर किसी दूसरी भाषा में।

## डबिंग–अनुवाद का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य :

फिल्म जगत में जहाँ सबटाइटलिंग का प्रयोग शुरू से ही हो रहा है, वहीं, डबिंग का आरंभ बोलती फिल्मों के समय से चलन में आया। शुरू में इसे फिल्मों के साउंड–ट्रेक में सुधार करके उसके ध्वनि–गुणों को बढ़ाने के लिए व्यवहार में लाया गया। इसके अलावा, फिल्म कलाकारों के लिए गाना गाने के संदर्भ में भी इसे व्यवहार में लाया गया, किंतु दूसरी भाषा में अनुवाद रूपी भाषायी रूपांतरण के संदर्भ में इसका व्यवहार बाद में शुरू हुआ। जहाँ तक वैश्विक पटल पर भाषायी रूपांतरण के संदर्भ में फिल्मों की डबिंग की शुरुआत का संबंध है, इसका श्रेय रेडियो–कीथ ऑर्फियम, न्यूयॉर्क के मेरिओन पी. हॉल्ट को जाता है। उन्होंने 1929 में 'रिटोरिया' नामक अंग्रेजी फिल्म को स्पेनिश में डब किया था। उसके बाद, धीरे–धीरे, कुछ वर्षों के भीतर ही डबिंग की तकनीक का काफी प्रसार हो गया। आगे चलकर, इसे दुनिया–भर में फैले विभिन्न भाषा–भाषियों के दर्शकों तक फिल्मों की पहुँच बनाने के लिए उन्हें डब किया जाने लगा।

जिस प्रकार यह स्वीकार किया जाता है कि 1913 में बनी 'राजा हरिश्चंद्र' हिंदी का पहली फिल्म है, उसी प्रकार हिंदी में पहली डब फिल्म के रूप में 'कर्म' फिल्म का उल्लेख किया जाता है। 1933 में बनी इस फिल्म का निर्देशन जे.एल. फ्रीअर हंट ने किया था। इस फिल्म से संबंधित तकनीकी कार्य ब्रिटिश तकनीशियनों ने किया था। दीवान शॉरर की कहानी की पटकथा रूयर्ट डाउनिंग ने तैयार की थी। इस फिल्म में दो परस्पर विरोधी रजवाड़ों के प्रगतिशील राजकुमार और राजकुमारी की प्रेम–कथा को दिखाया गया था। विशेष बात यह भी है कि इसमें चार गानों में से एक का फिल्मांकन अंग्रेजी भाषा में किया गया था। इसलिए, यह स्वीकार किया जाता है कि इसी से ही हिंदी फिल्मों में अंग्रेजी गानों के चलन की शुरुआत हुई थी।

आज स्थिति यह हो गई है कि डबिंग के कारण हॉलीवुड की एक फिल्म एक ही समय में कई–कई देशों में वहाँ की अपनी–अपनी भाषाओं में प्रदर्शित की जाती हैं। कई देशों में वहाँ की स्थानीय भाषाओं में भी उनकी डबिंग करके दिखाई जाती हैं या फिर उन्हें सबटाइटलिंग के जरिए दिखाया जाता है। इस संबंध में संक्षेप में केवल इतना ही कहा जा सकता है कि डबिंग के जरिए कोई भी फिल्म अपेक्षाकृत अधिक व्यापक दर्शक–वर्ग से जुड़ती है।

## 22.6.2 डबिंग–अनुवाद की प्रक्रिया

डबिंग – अनुवाद, शब्दकोश आदि अनुवाद के विभन्न प्रकार के साधन–उपकरणों का उपयोग करते हुए केवल कागज़–कलम पर लिखने की प्रक्रिया नहीं है। न ही यह कंप्यूटर के जरिए किए जाने वाला 'मशीनी अनुवाद' ही है कि मूल सामग्री कंप्यूटर में डाल दी और कंप्यूटर उसका दूसरी भाषा में अनुवाद दे दे। डबिंग अनुवाद एक विशिष्ट प्रक्रिया है, जिससे डबिंग–अनुवादक को पर्याप्त सावधानी से गुज़रना होता है।

फिल्म के दृश्य में अभिनय कर रहे अभिनेता द्वारा बोली गई भाषा (मूल) के स्थान पर दूसरी (लक्ष्य) भाषा के शब्द उच्चरित करवाने के लिए अनुवादक को अभिनेता की मुख–मुद्रा, हाव–भाव के साथ तालमेल बैठाने की चुनौती होती है। इसका सामना करने के लिए डॉ.रामगोपाल सिंह के शब्दों में कहा जाए तो अनुवादक को 'स्टुडियो या फिल्म चलाने, आगे–पीछे करने आदि की सुविधा से युक्त जगह पर बैठकर फिल्म के एक–एक शॉट को गहराई से भाषा, संवाद एवं भाषा की अर्थगत, सामाजिक–सांस्कृतिक एवं अर्थछविपरक स्थिति को समझना होता है तथा फिल्म को क्रमशः रोक–रोककर आगे चलाकर उसके संवादों के शब्दों के आकार, आंगिक भाषा, उपवाक्यों, वाक्यों के आकार का गहन अध्ययन करना होता है। उसे अभिनेता की होठों की गति तथा उच्चरित शब्दों, वाक्यों के अनुसार नाप–तौलकर संवाद तराशने होते हैं – प्रयुक्त ध्वनि, शब्द, विराम, वाक्य आदि के अनुरूप। वह संवादों के शब्दों के आकार, आंगिक भाषा, उपवाक्यों, वाक्यों के आकार के अनुरूप समान ध्वनि, आकार एवं मनोभाव को व्यक्त करने वाले शब्द, उपवाक्य, वाक्य आदि चुनता है। वह इस कार्य को बेहतर तरीके से करने की स्थिति में तब होता है, यदि उसके सामने बड़ा शीशा लगा हो तो वह कार्य करते–करते तुरंत उच्चारण करते–करते ओष्ठों की स्थिति तथा ओष्ठ संचालन की स्थिति को स्वयं परखकर संबंधित संवादों को अनूदित रूप में ढालकर तथा उनकी डबिंग हेतु उपयोगिता को परख कर आगे बढ़ सकता है।'(पृ. 254)

डबिंग–अनुवाद पर विचार करने के संदर्भ में डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू ने अपनी पुस्तक 'अनुवाद का नया चेहरा' में यहाँ तक कहा है कि 'डबिंग की इस प्रक्रिया में इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि भाषा का अनुवाद भले शाब्दिक न हो परंतु रूपांतरित भाषा का चेहरा मूल भावना के अनुरूप अवश्य हो, ताकि मूल रूप में प्रस्तुत विषय को उसी संवेदनशीलता के साथ दूसरी भाषा के दर्शकों तक पहुँचाया जा सके। इसमें इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि मुख्यतः भाषा का भावानुसार अनुवाद तो रहे परंतु संगीत तथा दृश्य के साथ उसकी लय एवं एकरसता अवश्य बनी रहे।' (पृ.115–116) यही कारण है कि फिल्मों के संवादों का अनुवाद, मूल के पूरी तरह समरूपी अथवा समान (identical) न होकर लगभग समान अथवा समतुल्य (equivalent) होता है।

डबिंग–अनुवाद करने की प्रक्रिया में 'समतुल्यता' को तो बनाए रखा ही जाता है, इसके अलावा ऐसा भी देखने में आता है कि कई बार मूल भाषा के संवादों का पहले लक्ष्य भाषा में अनुवाद किया जाता है और फिर उसके बाद उसका 'मुक्त पुनरनुवाद'। इसे स्पष्ट करने के लिए हम एन.टी. रामाराव और मीनाक्षी शेषाद्रि की द्विभाषिक फिल्म 'विश्वामित्र' का उल्लेख कर सकते हैं। इसके संवाद–लेखन के समय पहले संवाद–लेखक को तेलुगु से भाषांतर कर सरल अंग्रेजी में संवाद दिए गए, और फिर उनके आधार पर संवाद–लेखन किया गया। तेलुगु और तमिल फिल्म 'महाबली' का हिंदी डबिंग–अनुवाद करते समय भी इसी प्रक्रिया को अपनाया गया था। कहने का अभिप्राय यह है कि डबिंग–अनुवाद में एक से अधिक व्यक्तियों का सहयोग भी रहता है।

कुल मिलाकर यही कहा जा सकता है कि डबिंग–अनुवाद न तो शाब्दिक अनुवाद किया जाता है और न ही स्रोत भाषा के शब्दों का लक्ष्य भाषा में प्रतिशब्द प्रस्तुत कर देना है। इसके अलावा, उसमें स्रोत भाषा के वाक्य–विन्यास का भी अनुसरण नहीं किया जाता, लेकिन रूपांतरित भाषा को मूल पाठ की भावना के अनुरूप रखा जाता है ताकि वह मूल की संवेदनशीलता के अनुरूप दूसरी भाषाभाषियों तक पहुँचे। इसी

के साथ–साथ, सामाजिक–सांस्कृतिक परिवेश, देश–काल, जीवन–शैली और मूल्य पद्धति की प्रस्तुति के संदर्भ में सावधानी बरतने की आवश्यकता होती है। डबिंग के अर्थ, अवधारणा और अन्य आयामों को जानने के बाद हिंदी के संदर्भ में इसके व्यवहार का उल्लेख भी अनुचित न होगा।

### 22.6.3 डबिंग–अनुवाद के लाभ

बाज़ारवादी दृष्टि से देखा जाए तो डबिंग एक लाभदायक सौदा है, कम लागत प्रक्रिया में एक नई फिल्म बनाने का तरीका है। फिल्म निर्माण मूलतः एक व्यावसायिक कार्य है। पैसा कमाना इसमें मूलभूत उद्देश्य रहता है। लागत की दृष्टि से देखा जाए तो फिल्म निर्माण एक बहुत ही महँगा सौदा है। इसके निर्माण में करोड़ों रुपए तक लग जाते हैं। अगर फिल्म सुपर स्टार अभिनेताओं–अभिनेत्रियों को लेकर बनाई जाए या फिर मल्टी स्टार मूवी हो तो खर्च का बजट और भी अधिक बढ़ जाता है। वैसे भी अगर 'टाइटैनिक' जैसी फिल्म बनाई जाए तो उसके खर्च का हिसाब लगाना और भी मुश्किल हो जाता है। अगर फिल्म उस (मूल) भाषा के दर्शकों के बीच सुपर–डुपर हिट हो जाती है तो फिल्म निर्माण की लागत भी निकल आती है और फिल्म से जुड़े लोगों को लाभ भी हो जाता है। वहीं, इस प्रकार की हिट फिल्मों की दूसरी भाषा में प्रस्तुति से फिल्म व्यवसाय की बढ़ोतरी की संभावनाएँ और भी अधिक व्यापक–विस्तृत हो जाती हैं। यदि उसी फिल्म को दूसरी भाषा के अभिनेताओं–अभिनेत्रियों आदि की सहायता से बनाया जाए तो वह बहुत महँगा सौदा पड़ता है और उससे समय की बर्बादी भी होती है। ऐसे में डबिंग का सहारा लेना एक सार्थक समाधान सिद्ध होता है और अनूदित रूप में डब फिल्म को अन्य भाषाभाषी अपनी भाषा में देखकर आनंद लेते हैं।

डबिंग से यह भी लाभ रहता है कि फिल्म की पूरी निर्माण प्रक्रिया से दोबारा नहीं गुज़रना पड़ता, केवल अन्य भाषा/भाषाओं में मात्र उसका अनुवाद, संवादों की रिकॉर्डिंग–डबिंग और संपादन आदि कार्य करना पड़ता है। इस पर उसी कथानक–कहानी पर नई फिल्म बनाने की तुलना में खर्च भी काफी कम आता है और समय की बचत भी होती है। इस प्रकार डब की हुई फिल्म वस्तुतः कुछ ही दिनों–महीनों में एक प्रकार से नई फिल्म तैयार का रूप धारण कर लेती है। इस तरह स्वाभाविक है कि डब फिल्म ज्यादा लाभ अर्जन का जरिया बनती है। 'जुरासिक पार्क', 'अवतार', 'टाइटैनिक', 'होम एलोन', 'वार एंड पीस', 'ममी', 'द गॉडमदर', 'गॉडज़िला', 'एनाकोंडा', 'डीप–इंपेक्ट', 'लाइफ ऑफ पाई', 'हैरी पोटर', 'स्लमडॉग मिलेनियर', 'द टाइम मशीन', 'ग्रेट एक्सपैक्टेशन' आदि कुछ ऐसी ही फिल्में हैं जो मूलतः अंग्रेजी में तैयार की गईं किंतु अपने डब रूप में वे हिंदी भाषी दर्शकों के बीच सुपर–डुपर हिट रहीं। हिंदी में डब की हुई ये फिल्में देश के तमाम शहरों में नहीं, छोटे–बड़े कस्बों तक पहुँचीं/प्रदर्शित हुईं। हिंदी भाषा में डब होने के कारण इन्होंने खूब लोकप्रियता हासिल की और मुनाफा भी कमाया। वास्तविकता यह है कि अनेक विदेशी फिल्मों ने भारतीय दर्शकों को प्रभावित भी किया है। इसी तरह, हिंदी की अनेक फिल्में अन्य भारतीय भाषाओं में डब होकर देश के कोने–कोने में और विशेष तौर पर दक्षिण भारत में बड़े चाव से देखी जाती हैं। दक्षिण भारतीय भाषाओं में बनीं कई फिल्में हिंदी में डब होकर उत्तर भारतीयों के बीच बड़ी प्रसिद्ध हुई हैं। इसकी शुरुआत 1993 में बनी मणिरत्नम की फिल्म 'रोजा' से मानी जाती है। दक्षिण की बहुचर्चित और प्रभुदेवा अभिनीत फिल्म 'कादलन' का डब संस्करण जब हिंदी में 'हमसे है मुकाबला' नाम से

हिंदी फिल्म जगत में दिखाया गया तो इस फिल्म ने दर्शकों में खुब प्रसिद्धि पाई।

देश–विदेश की कार्टून और ऐनिमेशन फिल्में डब रूप में उतनी ही प्रसिद्ध हैं, जितनी कि मूल भाषा के दर्शकों के बीच। रूद्रयार्ड किप्लिंग की पुस्तक 'जंगल बुक' का मुख्य पात्र मोगली डबिंग के कारण बच्चों में विशेष तौर पर प्रसिद्ध रहा। ऐसी ही स्थिति 'हनुमान', 'रामायण' और 'श्री कृष्ण' ऐनिमेशन फिल्मों की रही। 'सिनचॉन', 'बार्बी', 'निंजा हथौड़ी', 'डोरेमेन', 'ओंगी एंड कॉकरोच', 'छोटा भीम', 'गणेशा माई फ्रेंड' आदि कार्टून या ऐनिमेशन फिल्मों के बच्चे मुरीद हैं। डबिंग के कारण ही 'टॉम एंड जेरी' जैसे टी.वी. सीरियल न केवल बच्चों में ही बल्कि बड़ों में भी अच्छे–खासे लोकप्रिय हैं। इसी तरह, 'हू इज़ द बॉस', '24', 'डिफरेंट स्ट्रॉक', 'स्मॉल वंडर', 'लिटिल मरमेड' आदि अनेक विदेशी सीरियल भी डब होकर हिंदी दृश्य माध्यम में विशेष रुचि से देखे जाते रहे हैं।

डबिंग के क्षेत्र में हुए विकास की तो अब स्थिति यह हो चुकी है कि एक ही फिल्म एक साथ कई–कई भाषाओं में एक–साथ रिलीज की जा रही है। उन्हें कई भाषाओं में डब करके न सिर्फ भारत में ही, बल्कि कई देशों में भी एक–साथ प्रदर्शित की जा रही है। इस तरह के प्रयास फिल्म निर्माताओं के लिए भारी मुनाफे का सौदा सिद्ध हो रहे हैं। 'गजनी' हिंदी सिनेमा की वह पहली थी जिसे कई भाषाओं में प्रदर्शित किया गया था। इसी क्रम में 'चेन्नई एक्सप्रेस', 'कृष 3', 'धूम 3', 'जय हो' आदि फिल्मों के नामों का उल्लेख किया जा सकता है। इस प्रकार के भारी मुनाफे के प्रयासों को देखते हुए ही आज अधिकांश फिल्म–निर्माता अपनी फिल्म के 'वर्ल्ड राइट्स' खूब मुनाफे में बेचते हैं।

डबिंग के रूप में अनुवाद कार्य केवल फिल्म जगत में ही लोकप्रिय नहीं है। विज्ञापनों में भी इसका बहुत अधिक प्रयोग किया जा रहा है। विज्ञापनों की डबिंग की प्रवृत्ति विशेष तौर पर बहुराष्ट्रीय कंपनियों के उत्पादों के विज्ञापनों में देखी जा सकती हैं। वे आम तौर पर सुपर स्टार को लेकर मूल विज्ञापन अंग्रेजी में तैयार करा लेते हैं और फिर उसे भिन्न–भिन्न भाषाओं में डब करवाकर विभिन्न भाषाओं के ज्यादा से ज्यादा दर्शकों तक पहुँच जाते हैं। विभिन्न टी.वी. चैनलों पर दिखाए जाने वाले टेलीशॉपिंग/टेलीमार्किटिंग के विज्ञापन भी मूलतः बड़े सुपर स्टारों के साथ डब किए हुए ही होते हैं जिनमें उत्पाद और कार्यक्रम प्रस्तोता आम तौर पर कोई विदेशी कलाकार ही होता है लेकिन उसके द्वारा बोली जाने वाली भाषा स्वदेशी या स्थानीय। ऐसा केवल डबिंग के कमाल से ही संभव हो पाता है।

## 22.7 डबिंग–अनुवादक : अपेक्षाएँ और चुनौतियाँ

डबिंग में अनुवाद के संदर्भ में, आइए अब हम अनुवादक से की जाने वाली अपेक्षाओं और उनके द्वारा अनुभव की जानें वाली चुनौतियों पर विचार करें।

### 22.7.1 डबिंग–अनुवादक से अपेक्षाएँ

कोई भी अनुवाद कार्य करने वाले अनुवादक से दोनों भाषाओं का ज्ञान, विषय–बोध, सामाजिक–सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य का ज्ञान आदि कुछ अपेक्षाएँ होती हैं। डबिंग–अनुवादक का भी इन गुणों से संपन्न होना जरूरी होता ही है। इसके अलावा, डबिंग–अनुवादक से कई प्रकार की विशिष्ट अपेक्षाएँ भी अपेक्षित रहती हैं क्योंकि डबिंग रूपी भाषायी

रूपांतरण कोई सरल कार्य नहीं है। जैसे सामान्य अनुवादक से अपेक्षा की जाती है कि उसका स्रोत और लक्ष्य भाषा पर पर्याप्त अधिकार हो, लेकिन डबिंग–अनुवादक से भाषा के प्रति विशेष सतर्कता की अपेक्षा भी होती है। इसके साथ–साथ जहाँ उसे विषय–ज्ञान जरूरी है, वहीं फिल्म संबंधी तकनीकी ज्ञान भी जरूरी है। इसलिए यहाँ हम केवल उन्हीं विशिष्ट अपेक्षाओं की चर्चा करेंगे, जो डबिंग–अनुवादक के लिए खास तौर पर जरूरी हैं।

**1. भाषा के प्रति सतर्कता** : डबिंग–अनुवादक का भाषा के प्रति सतर्क होना जरूरी है। इस अनुवाद में विशेष बात यह होती है कि इसमें भाषिक शुद्धता और परिनिष्ठता की ओर ध्यान न देकर संप्रेषणीयता का आधार लेकर चलना होता है। इसके लिए वह भाषा की मुखरता, गति, मुहावरा और रवानगी का पूरा–पूरा ध्यान रखता है। अनुवादक को शब्दानुवाद से बचना चाहिए, रूपांतरित भाषा मूल भावना के अनुरूप होनी चाहिए ताकि मूल के समान संवेदनशीलता को दूसरी भाषा के दर्शकों तक पहुँचाया जा सके। इसके लिए अनुवादक जहाँ एक ओर पात्रों की सामाजिक स्थिति का ध्यान रखता है, वहीं दूसरी ओर फिल्म के संभावित दर्शकों की मानसिकता और स्तर को भी ध्यान में रखते हुए कुछ भाषागत छूट लेता है। लेकिन, भाषा की यह छूट भी नियंत्रित ही होती है। और इस नियंत्रण का आधार बनता है – अभिनेताओं के होठों और आंगिक भाषा की अनुकूलता। अनुवादक लक्ष्य भाषा की प्रकृति, शैली, लाक्षणिकता, व्यंजना आदि को तो ध्यान में रखता ही है, साथ ही पात्रों के क्षेत्र, देश–काल, काम–धंधे आदि के अनुरूप शब्दों का चयन भी करता है।

डबिंग–अनुवादक को पात्रों के अनुकूल भाषा का चयन करना जरूरी होता है। अगर फिल्म का खलनायक या खलनायिका गाली–गलौज या अश्लील शब्द प्रयोग कर रहे हैं तो अनुवादक को लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुरूप गाली–गलौज या अश्लील शब्द प्रयोग की परिवेश के अनुसार छूट होती है। लेकिन इसके लिए उसे विवेक के अनुसार ही कार्य करना चाहिए। इस संदर्भ में हिंदी में डबिंग के लिए अनुवाद कार्य करने वाली अनुवादक चित्रा नारायण के ये विचार विशेष तौर पर ध्यान देने योग्य हैं कि 'कुछ समय पहले मैं वाल्ट डिज्ने की एनिमेशन–कार्टून फिल्मों का अनुवाद कर रही थी, जिसमें अंग्रेजी की, बल्कि अमेरिकी ग्राम्य प्रयोगों (american slangs) के प्यार जताने वाले संबोधन (endeanments) और गालियाँ (sweet words) भरी हुई थीं। honey, sweetie pie, sugar का हिंदी अनुवाद क्या हो सकता है? प्रिय? प्रियतमा? प्यारी? यह सब जरूरत से ज्यादा नाटकीय और भारी–भरकम लगते हैं, फिर भी रसमलाई, मधुमक्खी अच्छे लगेंगे। फिर लीजिए (sweet words) गालियों को, जैसे – fathead, dope, skunk, swine, garbage आदि। हिंदी में गालियों की कोई कमी नहीं है, परंतु फिल्मों के संवाद बच्चे याद कर लेते हैं और उन्हीं गालियों का फिर इस्तेमाल करते हैं। ऐसे शब्द, जो हानिकारक नहीं हों, वही अनुवादक को ढूँढ़ निकालने चाहिए। ऐसे स्थलों पर अनुवादक को बच्चों के कच्चे मनों पर पड़ने वाले प्रभावों के प्रति बहुत सावधान रहने की जरूरत है। अक्सर ऐसे शब्दों का सही शब्द नहीं मिल पाता। ऐसी हालत में मेरा विचार है कि यदि अंग्रेजी का शब्द निस्संकोच इस्तेमाल कर लिया जाए तो अनुवादक ऐसे शब्द या संवाद बेहिचक प्रयोग कर धर्मसंकट से बच सकता है। Please, see you, come on, I love you, I hate you, Hi, bye, thanks जैसे प्रयोग अपनी सभ्यता को कोई ठेस नहीं पहुँचाते।' (पृ 269)

**2. तकनीकी ज्ञान** : डबिंग के लिए अनुवाद करते समय अनुवादक को तकनीकी जरूरतों का ध्यान रखना होता है। उसे विषय–बोध के स्तर पर रंगमंचीयता का गहन

ज्ञान होना चाहिए क्योंकि सिनेमा भी तात्विक दृष्टि से रंगमंचीयता से युक्त रंगकर्म है। इसमें भाव–संप्रेषण के लिए जहाँ उच्चरित भाषा और आंगिक भाषा को व्यवहृत किया जाता है, वहीं सेट, चित्र, भाव–भंगिमाओं, संकेतों आदि को भी भावाभिव्यक्ति का माध्यम बनाया जाता है। डॉ.रामगोपाल सिंह ने इस बारे में विचार व्यक्त करते हुए सही ही लिखा है कि 'डबिंग हेतु अनुवादक के सतही ज्ञान से कुछ भी काम चलने वाला नहीं है, अपितु उसे रंगकर्म का गहन ज्ञान होना भी चाहिए तभी वह शब्दों एवं ध्वनियों के मर्म को समझ पाएगा तथा स्रोत भाषा के शब्दों के आकार एवं उच्चरित रूप में मुखाकृति के अनुरूप शब्द ढूँढ़कर उन्हें तब्दील कर पाएगा।' अपने रंगमंचीय ज्ञान के आलोक में अनुवादक को यह बोध हो पाता है कि फिल्म का कौन–सा दृश्य स्थिति को व्यक्त करने का माध्यम बनकर आगे बढ़ा रहा है और कहाँ संवाद आदि के रूप में भाषा की जरूरत है।

**3. सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों के अनुवाद का परिप्रेक्ष्य** : डबिंग के लिए अनुवाद करने वाले अनुवादक के समक्ष सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों के अनुवाद की भी चुनौतियाँ होती हैं। इसलिए उससे यह भी अपेक्षित होता है कि वह सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भों का भी ध्यान रखे, उनमें तालमेल बैठाए।

यह तो स्वीकार्य तथ्य है कि एक समाज की संस्कृति दूसरे समाज से पूरी तरह समान नहीं होती है। इसलिए डबिंग–अनुवादक सहित किसी भी प्रकार के अनुवाद के लिए सामाजिक–सांस्कृतिक संदर्भ चुनौतियाँ खड़ी करते हैं। डॉ. रीतारानी पालीवाल के अनुसार 'हर संस्कृति में किसी स्थिति अथवा बात की अभिव्यक्ति अलग–अलग तरह से हो सकती है। कभी–कभी स्रोत भाषा में किसी स्थिति से जुड़ी शारीरिक और भावपरक भंगिमाएँ लक्ष्य भाषा में उस स्थिति से जुड़ी भंगिमाओं और अभिव्यक्तियों से भिन्न होती हैं। राग–विराग की स्थितियाँ, शिष्टाचार की स्थितियों की अभिव्यक्तियों का तौर–तरीका विभिन्न संस्कृतियों में अलग–अलग होता है। भारतीय परंपरा में पैर छू कर या झुककर प्रणाम करना या जापान में बार–बार झुककर अभिवादन की स्थिति को पश्चिमी भाषाओं में संप्रेषित करने के लिए सही शब्द ढूँढ़ पाना सहज नहीं है।' (पृ.130) हालाँकि इसके समाधान के लिए डॉ. पालीवाल ने यह भी सुझाया है कि 'उपयुक्त शब्दों के अभाव में कई बार निःशब्दता से काम चलाया जाता है, हालाँकि पर्दे पर अभिनेता शब्दोच्चार करता दिखाई देता है तब ऑडियो का शांत रहना भी अस्वाभाविक ही लगता है।' (पृ.130) इसलिए यह कहा जा सकता है कि डबिंग–अनुवादक द्वारा सामाजिक स्थिति के अनुरूप चलने वाले शब्दों का ही प्रयोग करना होता है।

इन सभी विविध अपेक्षाओं के संदर्भ में देखें तो इनपर खरा उतरने वाले डबिंग–अनुवादक का कर्म–क्षेत्र कितना चुनौतीपूर्ण है। लेकिन, यहाँ यह उल्लेख करना भी अनुचित न होगा कि डबिंग के लिए संवाद–लेखक (अनुवादक) को मूल संवाद–लेखक की तुलना में बहुत कम मान्यता मिलती है। जबकि, वास्तविकता यह है कि स्रोत भाषा के मूल संवाद–लेखक की तुलना में डबिंग–अनुवादक को बहुत अधिक मेहनत करनी पड़ती है।

## 22.7.2 डबिंग–अनुवादक के समक्ष चुनौतियाँ

सामान्य और डबिंग हेतु अनुवाद में तात्विक दृष्टि से भिन्नता होने के कारण डबिंग–अनुवादक की स्थिति भी भिन्न हो जाती है। सामान्य प्रकृति के

सूचनात्मक–ज्ञानात्मक अथवा सृजनात्मक साहित्य के अनुवाद की तुलना में डबिंग के लिए अनुवाद स्वयं में विशिष्टता लिए होता है। सामान्यतः अनुवादक जहाँ मूल भाषा सामग्री में प्रयुक्त शब्दों–भावों आदि को विशेष महत्व देता है, वहीं डबिंग के लिए अनुवाद स्वयं में विशिष्टता लिए होता है। सामान्य अनुवाद करते समय भाषिक–सांस्कृतिक आदि विभिन्न प्रकार की चुनौतियों का तो अनुवादक सामना करना पड़ता ही है, डबिंग की विशिष्ट प्रकृति के कारण तकनीकी ज्ञान आदि कुछ भिन्न प्रकार की चुनौतियाँ भी उसके समक्ष उपस्थित होती हैं।

डबिंग–अनुवादक से स्रोत भाषा के साथ–साथ लक्ष्य भाषा के प्रति विशेष सावधानी की भी अपेक्षा होती है। बल्कि कहा यह जा सकता है कि डबिंग–अनुवादक को लक्ष्य भाषा के लक्षणों के साथ पूरा–पूरा न्याय करने की चुनौती होती है। भाषा के साथ न्याय करने की इस स्थिति का विस्तार 'स्थानीयता' तक व्याप्त होता है। डबिंग के लिए, अनुवादक के समक्ष दृश्य–चित्रों और शब्दों का सुयोग तालमेल करने की चुनौती होती है। इसलिए डबिंग को भली प्रकार से आत्मसात कर दृश्य के हाव–भाव के अनुकूल ऐसे भाषिक संवाद तैयार करता है जो अनुवाद के माध्यम से विशिष्ट स्वरूप प्राप्त किए होते हैं। अगर हम विशेष तौर पर विदेशी भाषाओं और ध्वनियों के संदर्भ में देखें तो अक्सर यह देखा जाता है कि पर्दे पर नजर आ रहे अभिनेता के होठों की गति और डब की गई आवाज के बीच कितना ही तारतम्य बैठाया गया हो, लेकिन उसमें कोई न कोई दोष मिल ही जाता है। इसलिए डबिंग–अनुवादक को उच्च–स्तरीय तकनीकी जानकारी होना भी जरूरी है तथा उसे स्वयं को उच्च–स्तरीय पेशेवर विषय–विशेषज्ञ (प्रोफेशनल) के रूप में प्रमाणित करना होता है। तभी बेहतर डबिंग की संभावना बन पाती है।

## 22.8 डबिंग और सबटाइटलिंग : बेहतर विकल्प

डबिंग और सबटाइटलिंग, फिल्म और टेलीविज़न जैसे जनसंचार के दृश्य–श्रव्य माध्यम में भाषायी रूपांतरण की दो अलग–अलग विधियाँ हैं; इनकी अपनी–अपनी विशेषताएँ हैं। इसलिए यह प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि डबिंग और सबटाइटलिंग में से बेहतर विकल्प कौन–सा है?

हालाँकि इसमें कोई संदेह नहीं कि डबिंग और सबटाइटलिंग लक्ष्य भाषा–भाषी दर्शक वर्ग को उनकी भाषा में फिल्म का रसास्वादन कराने की दृष्टि से सार्थक प्रयास हैं, किंतु यह भी सही है कि इनमें से बेहतर विकल्प खोजना कोई सरल कार्य नहीं है क्योंकि यह वाद–विवाद का विषय है। इसके पक्ष–विपक्ष में अनेक तर्क दिए जा सकते हैं। जैसे,

- सबटाइटलिंग में भाषा औपचारिक रूप ग्रहण कर लेती है, जबकि डबिंग में भाषा के स्तर पर स्थानीयता का पुट परिलक्षित किया जा सकता है जो दर्शकों को ज्यादा सहज प्रतीत होता है।
- अन्य भाषा और विशेष तौर पर विदेशी फिल्म आदि की डबिंग से उसका जो स्थानीयकरण उभरता है, वह अन्य भाषाभाषी दर्शकों के लिए अपेक्षाकृत सुविधाजनक होता है। जबकि सबटाइटलिंग में ऐसी अपेक्षा नहीं की जा सकती।
- डबिंग दूसरी भाषा में तैयार की गई फिल्म होती है क्योंकि इसमें पूरे संवाद को दूसरी भाषा में समकालिक संतुलन स्थापित करते हुए इस प्रकार तैयार

किया जाता है कि उसका मिलता–जुलता ध्वनि–संकेत लक्ष्य भाषा फिल्म आदि में निर्मित अनुभूत हो। इसलिए डब की हुई फिल्म आदि अनूदित रूप में मूल का विकल्प होती है, जबकि सबटाइटलिंग संवादों की पर्दे के निचले भाग पर नजर आने वाला पाठ प्रारूप होता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि डबिंग स्वयं में 'एकीकृत' अनूदित रूप वाला होता है। जबकि, सबटाइटलिंग बोले गए संवाद का स्क्रीन पर नजर आने वाला लिखित स्वरूप है। इसलिए वह 'खंडित' अनुवाद है। पाश्चात्य विद्वान हेनरिक गॉटलिब ने डबिंग को 'एकीकृत अनुवाद' और सबटाइटलिंग को 'खंडित अनुवाद' कहा है।

- फिल्म के दृश्य में अभिनय कर रहे अभिनेता द्वारा बोली गई भाषा (मूल) के स्थान पर दूसरी (लक्ष्य) भाषा के शब्द उच्चरित करवाने के लिए अनुवादक को संवादों के शब्दों के आकार, आंगिक भाषा, उपवाक्यों, वाक्यों के आकार का गहन अध्ययन कर अभिनेता की होठों की गति तथा उच्चरित शब्दों, वाक्यों के अनुसार नाप–तौलकर संवाद तराशने होते हैं। उसके समक्ष मुख–मुद्रा, हाव–भाव के साथ तालमेल बैठाने की चुनौती भी होती है। वहीं, सबटाइटलिंग में मूल भाषा संवाद को दूसरी भाषा में केवल उतने ही शब्दों में दर्शक–पाठकों के लिए संवादों के रूप में ही प्रस्तुत करना होता है, जितने एक फ्रेम में आ सकें। पर्दे पर ज्यादा से ज्यादा दो पंक्तियों में ही लिखे सबटाइटलों में से प्रत्येक पंक्ति में आठ–दस शब्द ही लिखे जाते हैं और लिखित संवादों का फिल्म की गति और पर्दे के आकार के साथ समकालिक संतुलन बनाना होता है।

- हालाँकि सबटाइटलिंग में मूल आवाज़ बनी रहने के कारण इसे ज्यादा प्रामाणिक (authentic) माना जाता है। लेकिन, सबटाइटलिंग की हुई फिल्म को देखना, मूल भाषा के संवादों को सुनना और अपनी भाषा में लिखे उसके सबटाइटलों को साथ–साथ पढ़ना होता है, जिसे सहजता से संपन्न कर पाना मुश्किल होता है। इससे फिल्म की बोधगम्यता में कई बार कठिनाई होती है, दर्शक उसके साथ तादात्म्य स्थापित नहीं कर पाता। परिणामस्वरूप फिल्म आदि के रसास्वादन में अनावश्यक व्यवधान पहुँचता है। इसके स्थान पर डबिंग बेहतर विकल्प नज़र आता है क्योंकि वह अन्य भाषा–भाषियों के लिए अपेक्षाकृत सुविधाजनक होती है।

- डबिंग की तुलना में सबटाइटलिंग कम खर्चीली विधि है। कहा तो यह जाता है कि सबटाइटलिंग की तुलना में डबिंग में 15 गुना अधिक खर्च होता है।

- इसके अलावा, यह भी सच्चाई है कि भले ही कितनी ही सावधानी बरती जाए, स्रोत भाषा और ध्वनि आदि के साथ स्क्रीन पर कलाकार के होंठों की गति एवं डब की गई आवाज में कितना भी समकालिक संतुलन क्यों न स्थापित कर लिया जाए, उसमें कुछ न कुछ दोष अवश्य रह ही जाता है। फिर भी, इसमें कोई संदेह नहीं कि भाषा का अटपटापन तो स्वीकार्य होता है क्योंकि इससे फिल्म देखने का क्रम नहीं टूटता।

वस्तुतः सबटाइटलिंग और डबिंग, अनुवाद की दो भिन्न विधाएँ हैं इनके अपने–अपने गुण–दोष हैं। वैसे, फिल्म आदि को अन्य भाषाभाषी बृहतर दर्शक–समुदाय तक पहुँचाने के इन दोनों विधाओं को व्यवहार में लाया जाता है। वस्तुस्थिति यह है कि इन दोनों विधाओं के कारण देशी और विदेशी, दोनों ही भाषाओं के संदर्भ में अनुवाद

की माँग काफी बढ़ी है और ये दोनों ही कार्य एक उद्योग का रूप धारण कर चुके हैं। इस दृश्य–श्रव्य माध्यम में देश–विदेश की भाषाओं में बढ़ती माँग ने अनुवाद को एक नई दिशा और नए दिशा क्षेत्र प्रदान किए हैं और अनुवादकों को रोजगार के नए अवसर।

## 22.9 वॉयस ओवर (पार्श्व–वाचन) : अर्थ और प्रयोग–क्षेत्र

फिल्मों सहित दृश्य–श्रव्य माध्यम में सबटाइटलिंग और डबिंग के अलावा पार्श्व वाचन (voice over) का भी सहारा लिया जाता है। पार्श्ववाचन और अनुवाद पर विचार करने से पूर्व पार्श्व वाचन के अर्थ–स्वरूप और अवधारणागत आयामों पर नजर दौड़ाना भी अनुपयुक्त न होगा।

### 22.9.1 पार्श्व वाचन : अर्थ और स्वरूप

'पार्श्व वाचन' के शाब्दिक अर्थ की तरफ जाएँ तो यह कहा जा सकता है कि 'पार्श्व' का अर्थ है – 'पीछे' और 'वाचन' का अर्थ है – बोलना। इस तरह, पार्श्व वाचन 'पीछे से बोलना' है। इसी प्रकार, अंग्रेजी के 'voice over' शब्द में से 'voice' शब्द का अर्थ है – 'आवाज' और 'over' शब्द का अर्थ है – 'ऊपर'। इस तरह 'voice over' का अर्थ हुआ – एक आवाज के ऊपर दूसरी आवाज। सरल शब्दों में कहें तो मूल भाषा में तैयार फिल्म और टेलीविजन कार्यक्रम के ध्वनि पथ (sound track) पर जो कुछ बोला जा रहा है उसे हटाकर उसके स्थान दूसरी भाषा में और भिन्न आवाज में वक्तव्य प्रस्तुत करना 'पार्श्व वाचन' कहलाता है।

पार्श्व वाचन में वक्ता पर्दे पर नजर नहीं आता, किंतु उसकी आवाज सुनाई देती है और साथ ही बहुत हल्की आवाज में मूल भाषा में बोले गए संवाद–वाक्य आदि की भी। इसमें दृश्य में नजर आ रहे वक्ता द्वारा बोले जा रहे मूल संवाद इतने धीमे स्वर में सुनाई दे रहे होते हैं कि दर्शक को यह तो महसूस होता है कि वक्ता कुछ बोल रहा है किंतु वह उन्हें समझ नहीं पाता। इसके स्थान पर पीछे से दूसरी भाषा में संवाद की प्रस्तुति इतनी ऊँची आवाज़ में होती है जिसे दर्शक आसानी से सुन और समझ लेता है। इस तरीके से दर्शक को यह पता चल जाता है कि वह जिसे स्पष्ट रूप से सुन रहा है वह मूल भाषा से संबंधित न होकर दूसरी भाषा में प्रस्तुत वह फिल्म या कार्यक्रम है जिसे किसी अन्य व्यक्ति की आवाज़ के जरिए प्रस्तुत किया जा रहा है। इस तरह, मूल भाषा में तैयार फिल्म और टेलीविजन कार्यक्रम आदि के ध्वनि पथ में दृश्यों के अंशों में भाषा के द्वारा अधिक विस्तार दे दिया जाता है। डॉ. डी.के. जैन ने 'पार्श्व वाचन' पर जो विचार किया है, उससे यह पता चलता है कि 'किसी एक व्यक्ति की आवाज के ऊपर दूसरे व्यक्ति की आवाज का आना, किसी दृश्य या घटना का वर्णन करना तथा उस भाषा के दर्शकों के समक्ष दृश्य को साकार और जीवंत कर देना ही वायस ओवर या पार्श्व वाचन है।'

### 22.9.2 'पार्श्व वाचन' तकनीक प्रयोग के क्षेत्र

'पार्श्व वाचन' तकनीक के प्रयोग का विस्तार सिनेमा और टेलीविजन जैसे इलेक्ट्रॉनिक और नव–इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की विभिन्न विधाओं में से सूचनापरक सामयिक लघु फिल्में या 'वृत्तचित्र' (documentaries) विधा में और न्यूज़ रिपोर्ट तैयार करने आदि के स्तर पर नजर आता है। अंग्रेजी का 'डॉक्यूमेंट' शब्द, लैटिन से फ्रांसीसी भाषा के मार्ग से गुजरकर विकसित हुआ है। मूलतः 'teach' (शिक्षा) अर्थ को व्यक्त करने वाले

लैटिन के 'docere' से बना लैटिन शब्द 'documentum' फ्रांसीसी भाषा में आकर 'डॉक्यूमेंटेर' (documenter) हो गया है और वहाँ से चलकर अंग्रेजी भाषा में स्थान प्राप्त कर गया।

फ्रांसीसी भाषा में 'डॉक्यूमेंटेर' शब्द का प्रयोग, यात्रा–चित्रों के अर्थ में किया गया। इस अर्थ में देखा जाए तो वृत्तचित्र (डॉक्यूमेंटरी) निश्चित और वास्तविक स्थान में जाकर वहाँ के छायांकन को व्यक्त करता है। उल्लेखनीय है कि यह छायांकन यथार्थ साक्ष्य प्रस्तुत करता है और इस प्रस्तुति के मूल में सूचना अथवा शिक्षा देने का भाव निहित है। डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र ने वृत्तचित्र को परिभाषित करते हुए लिखा है कि 'वृत्तचित्र वह विधा है जो किसी सत्य घटना, तथ्य, सूचना, व्यक्तित्व और परिस्थिति पर आधारित होती है तथा जिसका उद्देश्य मनोरंजन की अपेक्षा शिक्षा और सूचना देना अधिक होता है। जब यह कार्य दृश्यों द्वारा किया जाता है तो वह प्रक्रिया फिल्म अथवा टेलीविजन वृत्तचित्र कहलाता है। रेडियो वृत्तचित्र को रूपक में समाहित किया जा सकता है।'

'पार्श्व वाचन' को वृत्तचित्र में खूब इस्तेमाल किया जाता है। इसके अलावा, किसी फिल्म या टेलीविजन कार्यक्रम के किसी दृश्य–विशेष के दौरान, दृश्य की मूल आवाज के ऊपर दूसरी भाषा को सफलतापूर्वक डालने की तकनीक भी 'पार्श्व वाचन' ही है। इसे उस समय व्यवहार में लाया जाता है, जब फिल्म का पात्र मूल भाषा से इतर स्थानीय या विदेशी भाषा बोल रहा होता है। समाचारों में भी इस विधि को कभी–कभी आधार बनाया जाता है।

## 22.10 पार्श्व–वाचन और अनुवाद

इकाई के पिछले भाग में आपने यह जाना कि पार्श्व–वाचन क्या है। इसका अर्थ मोटे तौर पर यह बताता है कि यह डबिंग का ही एक रूप है। लेकिन वास्तविकता यह है कि इन दोनों में अंतर है। अंतर के इन आयामों को अनुवादक को जानना जरूरी है ताकि वह इन अनुप्रायोगिक कार्यों को भली प्रकार से संपन्न कर सके। आइए, पार्श्व वाचन और डबिंग में अंतर के इन आयामों को जानें। लेकिन, उससे पहले पार्श्व वाचन के अनुवाद के साथ संबंध पर भी विचार करना उपयुक्त होगा।

### 22.10.1 पार्श्व वाचन और अनुवाद : अंतर्संबंध

पार्श्व वाचन और खास तौर पर मीडिया की वृत्तचित्र विधा में इसके प्रयोग पर की गई चर्चा के द्वारा व्यक्त इसके अर्थ और स्वरूप की अनुवाद से संबद्धता का साफ तौर पर आधार निर्मित होता नजर आता है। फिल्मों–टेलीविजन कार्यक्रमों के पार्श्व वाचन के लिए भी अनुवाद अपनी परंपरागत सीमाओं को तोड़कर नए स्वरूप, नई तकनीक, नए चेहरे के रूप में उभरकर सामने आता है। सबटाइटलिंग और डबिंग की भाँति इसे भी 'भाषायी रूपांतरण' (Language Transfer) का एक प्रकार स्वीकार किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि पार्श्व वाचन केवल अनुवाद के द्वारा ही संभव है क्योंकि इसकी तो अवधारणा में ही यही भाव निहित है कि दृश्य–विशेष के दौरान बोले जा रहे संवाद बहुत धीमी आवाज में सुनाई देते हैं, जबकि उसके स्थान पर दूसरी भाषा में बोले गए संवाद स्पष्ट रूप से सुनाई पड़ने लायक आवाज में रिकॉर्ड किए हुए होते हैं। अगर ये संवाद आदि दूसरी भाषा में न हों तो मीडिया के क्षेत्र में पार्श्व वाचन का अस्तित्व ही नहीं बन पाता।

किसी भी वृत्तचित्र आदि के माध्यम से प्रस्तुत यात्रा–चित्रों से स्वर पाने वाली शिक्षा और सूचना को दूसरी भाषा में प्रस्तुत किया जाता है तो वह 'पार्श्व वाचन अनुवाद' बन जाता है। पार्श्व–वाचन अनुवाद, दृश्य–श्रव्य सामग्री के अनुवाद की एक ऐसी तकनीक है जिसमें पर्दे पर नज़र आ रहे वक्ता की आवाज़ को मूल ऑडियो साउंड ट्रेक पर काफी हल्का कर दिया जाता है और उसके स्थान पर अनूदित पाठ को उच्चरित करने वाले दूसरे व्यक्ति की आवाज़ को रिकॉर्ड कर लिया जाता है। पार्श्व वाचन की इस युक्ति को दूसरी भाषा में फिल्म या टेलीविज़न कार्यक्रम प्रस्तुत करने के लिए व्यवहार में लाया जाता है। संवादों का पार्श्व वाचन संबंधी कार्य डबिंग थिएटर में किया जाता है और इसमें माइक्रोफोन आदि आधुनिक तकनीकी उपकरणों की सहायता ली जाती है।

पार्श्व वाचन के लिए सीधा भाषायी रूपांतरण (अनुवाद) किया जाता है। इस कारण यह मान लिया जाता है कि पार्श्व वाचन में शाब्दिक अनुवाद का सहारा लिया जाता है। 'अनुवाद और मीडिया' पुस्तक में डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू ने लिखा है कि 'यहाँ पर चूँकि भाषा को दृश्यात्मक लय प्रदान करने वाला, अभिनय करने वाला अभिनेता अभिनेता नहीं रहता और जहाँ पर अन्य प्रारूप उसके शाब्दिक अनुवाद द्वारा ही निहित रहता है।' (पृ.68) हालाँकि, उनका यह कहना सही है कि शब्दों पर केंद्रित रहते हुए अगर केवल शाब्दिक अनुवाद ही किया जाए तो वह लक्ष्य भाषा में सहज भाषिक प्रस्तुति नहीं कर पाएगा। इसी प्रकार अगर केवल 'भाव' को ध्यान में रखते हुए ही अनुवाद किया जाए तो वह मूल की तुलना में विस्तार पा सकता है जिससे समकालिक संतुलन (सिनक्रॉनाइज़ेशन) में कठिनाई आ सकती है, इसलिए पार्श्व वाचन में शब्दानुसार और भावानुवाद के बीच संतुलन बनाए रखना भी जरूरी होता है।

चूँकि पार्श्व वाचन के लिए सीधा भाषायी रूपांतरण (अनुवाद) किया जाता है, इसलिए अनुवाद करते समय वैसी सावधानी बरतने की जरूरत नहीं होती, जैसी कि डबिंग के लिए अनुवाद में होती है क्योंकि इसमें दृश्यात्मक लय पैदा करने वाला, अभिनय करने वाला अभिनेता नहीं होता है। लेकिन, इसका यह भी अभिप्राय नहीं है कि अनूदित पाठ को पढ़ने वाले व्यक्ति को मूल वक्ता की मुख–मुद्रा, हाव–भाव और होठों के फैलाव या उतार–चढ़ाव आदि के साथ भाषा का समकालिक संतुलन नहीं बैठाना होता। पार्श्व वाचन में वक्ता को यह संतुलन केवल पाठ बोलते समय आवाज़ के उतार–चढ़ाव और समय के स्तर पर बनाए रखना जरूरी होता है। इसलिए यह कहा जा सकता है कि पार्श्व वाचन अनुवाद में भी यह संतुलन उतना ही आवश्यक है, जितना कि डबिंग रूपी भाषायी रूपांतरण के समय इसे बनाए रखा जाता है, अन्यथा दूसरी भाषा के दर्शक को दृश्य सहज अनुभव नहीं होगा और वह उसका भली प्रकार से आस्वादन नहीं कर पाएगा। भाषा के साथ–साथ संतुलन स्थापित करने से पार्श्व वाचन जीवंत और प्रभावशाली प्रतीत होता है। टेलीविज़न पर 'डिस्कवरी', 'हिस्ट्री', 'ऐनिमल प्लेनेट', 'नेशनल ज्योग्राफिक', 'ई.एस.पी.एन.' आदि चैनलों पर दिखाई जाने वाली अधिकांश हिंदी फिल्मों में पार्श्व वाचन अनुवाद तकनीक का अत्यंत आकर्षक और मनोहारी प्रयोग इसका प्रत्यक्ष प्रमाण है। पूर्वी यूरोप के अनेक देशों सहित विश्व के अनेक देशों में सभी प्रकार की फिल्मों का अनुवाद करने के लिए पार्श्व वाचन को इस्तेमाल में लाया जाता है। इसके अलावा, अपनी ही भाषा में बनी फिल्मों में भी इसे उस समय व्यवहार में लाए जाने के उदाहरण देखे जा सकते हैं, जब फिल्म का पात्र मूल भाषा से इतर स्थानीय या विदेशी भाषा बोल रहा होता है। वैसे, अनुवाद की इस विधि को आम तौर पर सूचनापरक सामयिक लघु फिल्में यानी वृत्तचित्र

(documentaries) और न्यूज़ रिपोर्ट तैयार करते समय व्यवहार में लाया जाता है।–

आर्थिक दृष्टि से भी देखें तो पार्श्व वाचन सस्ती प्रक्रिया है क्योंकि इसमें अनूदित पाठ को केवल एक ही वक्ता की आवाज में दर्ज करा दिया जाता है। तकनीकी दृष्टि से भी यह अधिक लाभकारी है क्योंकि इससे पार्श्व वाचन करने वाले दृश्य का बोले जा रहे संवादों आदि के साथ समकालिक संतुलन बनाने की जरूरत नहीं होती है। किंतु वाणिज्यिक सिनेमा और टेलीविज़न कार्यक्रमों में पार्श्व वाचन सार्थक नहीं हो पाता। ऐसे में डबिंग बेहतर विकल्प नजर आता है।

## 22.10.2 पार्श्व वाचन और डबिंग में अंतर

पार्श्व वाचन और डबिंग, तात्विक दृष्टि से हमें एकसमान प्रतीत होते हैं। इसमें कोई संदेह नहीं कि डबिंग और पार्श्व वाचन, दृश्य–श्रव्य अनुवाद की वे तकनीकें हैं जिनके कारण पर्दे पर नज़र आ रहे अभिनेता के एक भाषा में बोले गए संवाद के स्थान पर दूसरी भाषा की आवाज़ सुनाई दे पाती है। इन दोनों का संबंध मूल संवादों की ऑडियो रिकॉर्डिंग से है और यह कार्य अत्याधुनिक सुविधाओं से संपन्न स्टूडियो में किया जाता है। इस दृष्टि से पार्श्व वाचन, डबिंग का ही एक रूप है। किंतु यह भी वास्तविकता है कि पार्श्व वाचन डबिंग से थोड़ी भिन्नता लिए हुए है। भिन्नता के आयाम इस प्रकार हैं :

- ऑडियो साउंड–ट्रेक से अवांछित ध्वनियाँ हटाने के लिए शूट की गई फिल्म की डबिंग करना अनिवार्य हो जाता है, जबकि पार्श्व वाचन में ऐसी अपेक्षा नहीं होती है।
- डबिंग का संबंध ऑडियो साउंड–ट्रेक से अवांछित ध्वनियाँ हटाने, ध्वनि प्रभाव डालने और पार्श्व गायन से भी है और फिल्म के गीतों तथा संवादों को मूल भाषा के स्थान पर दूसरी भाषा में बदलने से संबंधित भी। पार्श्व वाचन का संबंध केवल फिल्म के संवादों को मूल भाषा के स्थान पर दूसरी भाषा में प्रस्तुत करने से है।
- अगर हम अनुवाद के संदर्भ में डबिंग को देखें तो इसमें अनुवादक को कुछ विशिष्ट तकनीकी जरूरतों का ध्यान रखना होता है। जैसे, दृश्य में नजर रहे अभिनेताओं के होठों की गति और शारीरिक भाषा (body language), हाव–भाव में समरूपता बनाए रखने के लिए उच्चारणात्मक तालमेल बैठाने की आवश्यकता होती है। जबकि, पार्श्व वाचन में ऐसी अपेक्षा नहीं की जाती।
- डबिंग में अनुवादक को इस तालमेल को समय–निर्धारण (timing) के स्तर पर भी निभाना होता है। जबकि, पार्श्व वाचन के लिए तैयार की जा रही वर्णन करने वाली सामग्री में इस प्रकार की कोई समय सीमा निर्धारित नहीं होती। लेकिन, यह असीमित भी नहीं होती। कहने का अभिप्राय यह है कि अनुवादक को केवल इतना सुनिश्चित करना आवश्यक होता है कि उसके द्वारा किया जा रहा वर्णन दृश्य के संदेश के साथ मेल खाए।
- डबिंग का संबंध मनोरंजक फिल्मों से है, जबकि पार्श्व वाचन का संबंध मुख्य रूप से वृत्तचित्र और न्यूज़ रिपोर्ट जैसे सूचनापरक या ज्ञानात्मक सिनेमा से है।
- डबिंग–रिकॉर्डिंग अभिनेता–कलाकारों द्वारा स्वयं अपनी आवाज़ में भी कराई जा सकती है और अन्य अभिनेता–कलाकारों अथवा व्यावसायिक रूप से डबिंग कार्य करने वाले विशेषज्ञों द्वारा भी। कहने का अभिप्राय यह है कि फिल्म में जितने पात्र संवाद या गीत आदि बोलते है, डबिंग के लिए भी उतनी

ही आवाज़ें चाहिए होती हैं। वहीं, पार्श्व वाचन में दृश्यों की व्याख्या आम तौर पर एक ही व्यक्ति द्वारा और वह भी मुख्यतः पुरुष के द्वारा की जाती है।

- डबिंग में अभिनेताओं के हाव–भाव और संवादों आदि का ध्यान रखा जाता है। इसमें होंठों की गति और शारीरिक भाषा की मैखिक भाषा के साथ एकरूपता सुनिश्चित की जाती है, जबकि पार्श्व वाचन में पूरी कथा–कहानी का बयान मात्र होता है। वह केवल इतना सुनिश्चित करता है कि जो वर्णन किया जा रहा हो, वह दृश्यों के साथ अवश्य मेल खाता हो।
- डबिंग में आवाज़ मूल की भाँति संवेदनाओं का हूबहू दर्शात्मक चित्रण करने वाली होती है, जबकि वॉयस ओवर में ऐसी कोई सीमा नहीं है।
- डबिंग करते समय दृश्य और संगीत के साथ उसकी लय और एकरसता को बनाए रखा जाता है।
- डबिंग में भावानुवाद पर अधिक ज़ोर होता है तो पार्श्व वाचन में शाब्दिक अनुवाद पर।
- डब फिल्म देखकर दर्शक को यह अहसास नहीं हो पाता कि फिल्म के पात्र के संवाद अनूदित हैं, आवाज़ किसी अन्य की है। वहीं, पार्श्व वाचन फिल्म आदि देखकर दर्शक को यह पता चल जाता है कि वह जो सुन रहा है वह मूल न होकर अनुवाद है।
- वॉयस ओवर की तुलना में डबिंग में अतिरिक्त प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है।

वस्तुतः डबिंग की तुलना में वॉयस ओवर का महत्व–प्रासंगिकता और मूल्य कम है, वहीं यह भी सही है कि यह डबिंग से कम अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य भी है।

## 22.11 सारांश

भाषायी सिनेमा, टेलीविजन कार्यक्रम और अनुवाद आज एक–दूसरे के ऐसे पूरक बन चुके हैं जिसकी परिकल्पना कभी नहीं की गई थी। इन क्षेत्रों में अनुवाद ने अपने परंपरागत रूप से ऊपर उठते हुए समय, स्थान और प्रसंग के अनुरूप बदलकर नव–तकनीकों की सहायता से स्वयं एक नया चेहरा ग्रहण कर लिया है, जिसके कारण न केवल सिनेमा आदि का विकास हुआ है और उसकी उपादेयता में बढ़ोतरी हई है बल्कि अनुवाद की भी महत्व–प्रतिष्ठा हुई है। सिनेमा आदि ने भी अनुवाद में गतिशीलता और परिवर्तनशीलता लाकर उसे नए अर्थों में ढाल दिया है। सबटाइटलिंग, डबिंग और पार्श्व–वाचन के रूप में होने वाले भाषायी रूपांतरण ने भाषाई बाधाओं को तोड़ा है। इन्होंने दृश्य–श्रव्य माध्यम सिनेमा में अनुवाद के स्वरूप को व्यापक से व्यापकतर बनाया है। इस प्रकार के प्रयासों से मूल भाषा के फिल्म निर्देशकों को तो लाभ मिलता ही है, साथ ही लक्ष्य भाषा समाज भी लाभान्वित होता है। जैसे, लक्ष्य भाषी समाज के प्रशासन को मनोरंजन कर आदि के रूप में अपार धनराशि प्राप्त होती है। इनके और विशेष तौर पर सबटाइटलिंग तथा डबिंग के महत्व का अंदाजा फ्रांसीसी कलाकार और आलोचक निकोलस बोरियो (Nicolos Bourreau) के इस कथन से लगाया जा सकता है कि आज के सूचना–संचार प्रौद्योगिकी के युग में जहाँ अनेक संस्कृतियों के बीच आपस में संपर्क से अनुवाद की ज्यादा जरूरत

होगी और ज्ञान के प्रसार में फिल्मों को ज्यादा महत्व दिया जाएगा, वहीं डबिंग और सबटाइटलिंग का वर्तमान शताब्दी में अधिक महत्वपूर्ण स्थान होगा।

आज वस्तुस्थिति यह है कि सिनेमा आदि के क्षेत्र में अनुवाद के इन नए स्वरूपों की भारी मांग है। इसने अनुवादकों के लिए रोज़गार का वह नया कर्म–क्षेत्र खोल दिया है जिसमें उनकी भारी मांग है। वस्तुतः यह रोज़गार में अच्छी आय का जरिया है, जो व्यवसाय का रूप धारण कर चुका है। अनुवादक इन क्षेत्रों में अपनी व्यावसायिक रूप से सेवाएँ प्रदान करके इस उद्योग को फलने–फूलने में अपना अप्रत्यक्ष किंतु महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। सबटाइटलिंग, डबिंग और वॉयस ओवर के बारे में इस इकाई में विस्तार से दी गई जानकारी के आधार पर आपको यह स्पष्ट हो गया होगा कि अनुवाद के इन नए रूपों में अनुवादक से क्या अपेक्षाएँ रहती है और आप उसे किस तरह से भली प्रकार से निष्पादित कर सकते हैं।

## 22.12 अभ्यास के लिए प्रश्न

1. दृश्य–श्रव्य माध्मयों में अनुवाद के नए विविध रूपों का परिचय दीजिए।
2. सबटाइटलिंग में अनुवाद तकनीक पर विचार कीजिए।
3. डबिंग की अवधारणा और प्रक्रिया का वर्णन कीजिए।
4. डबिंग–अनुवादक से क्या अपेक्षाएँ की जाती हैं?
5. आपके विचार में डबिंग और सबटाइटलिंग में से बेहतर विकल्प कौन–सा है और क्यों?
6. पार्श्व वाचन तकनीक प्रयोग के क्षेत्रों की व्याख्या कीजिए।
7. पार्श्व वाचन और डबिंग में अंतर क्या है?

## 22.13 उपयोगी पुस्तकें


- *अनुवाद विज्ञान की भूमिका*, डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 2008.
- *प्रयोजनमूलक हिंदी*, डॉ. नरेश मिश्र, डॉ. सुरेश सिंहल, डॉ. डी.के. जैन, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, 2003.
- *अनुवाद का सामयिक परिप्रेक्ष्य*, संपा. प्रो. दिलीप सिंह और प्रो. ऋषभदेव शर्मा (डबिंग और सबटाइटलिंग – डॉ. गोपाल शर्मा), दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा, मद्रास (तमिलनाडु), 2009.
- *अनुवाद और भाषिक संस्कृति : हिंदी के प्रयोजनपरक संदर्भ*, प्रो. रीतारानी पालीवाल, आर्य प्रकाशन मंडल, दिल्ली, 2010
- *अनुवाद के विविध आयाम*, डॉ.रामगोपाल सिंह जादौन, लता साहित्य सदन, गाज़ियाबाद (उत्तर प्रदेश), 2012
- *अनुवाद का नया चेहरा*, डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू, राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी, जयपुर, 2003

- *अनुवाद और मीडिया,: नई सदी में सिद्धांत स्वरूप,* डॉ. कृष्ण कुमार रत्तू, नेशनल पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, 2002
- *अनुवाद शतक (भाग 2),* संपा. नीता गुप्ता और अन्य (फिल्मों की डबिंग में समतुल्यता का प्रश्न – चित्रा नारायण), भारतीय अनुवाद परिषद, नई दिल्ली, 2007
- *मीडिया लेखन : सिद्धांत और व्यवहार,* डॉ. चंद्रप्रकाश मिश्र, संजय प्रकाशन, दिल्ली, 2003
- Indian Literature, 268, March/April 2012 ("Alternative Systems of Knowledge : A Study in Process and Paradigm" -- Prof. A.K. Singh), Sahitya Akedemi, New Delhi.
- Audio-visual Translation : Subtitling, Jorge Diaz Cintas and Aline Remael, Routledge, New York, 2007.


ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY